लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 32 | अंक : 66वाँ (प्रथम ई संस्करण) | संयुक्तांक (अक्टूबर, 2021-मार्च, 2022)

लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार का कार्यालय, पटना

प्रहरी परिवार

श्री रामावतार शर्मा
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री अभिषेक सिंह
वरीय उप महालेखाकार

श्री आदर्श अग्रवाल
उप महालेखाकार

श्री शिव शंकर
उप महालेखाकार

सुश्री पुष्पलता
उप महालेखाकार

श्री राकेश कुमार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विकास कुमार नं.1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मनोज कुमार नं.1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री दिवाकर राय
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री सुजीत कुमार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री राजू कुमार सिंह
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री शंकरा नन्द झा
हिन्दी अधिकारी

मो0 दानीश
कनिष्ठ अनुवादक

श्री वीरेन्द्र साहू
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अभिषेक कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

कार्यालयीन त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

66वाँ अंक

महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार का कार्यालय, पटना
महालेखाकार भवन,
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 32 | अंक : 66वाँ (प्रथम ई संस्करण) | संयुक्तांक (अक्टूबर, 2021-मार्च, 2022)

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

प्रकाशन : प्रहरी

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने है। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक मंडल

प्रकाशक : राजभाषा कार्यान्वयन समिति, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार का कार्यालय, पटना

आवरण पृष्ठ : लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम की तस्वीरें

साज-सज्जा : निशा ग्राफिक्स, पटना

मूल्य : राजभाषा हिंदी की निरंतर सेवा

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 32 | अंक : 66वाँ (प्रथम ई संस्करण) | संयुक्तांक (अक्टूबर, 2021-मार्च, 2022)

प्रहरी परिवार

संरक्षक

श्री रामावतार शर्मा
महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

परामर्शी

श्री अभिषेक सिंह	वरीय उप महालेखाकार
श्री आदर्श अग्रवाल	उप महालेखाकार
श्री शिव शंकर	उप महालेखाकार
सुश्री पुष्पलता	उप महालेखाकार
श्री राकेश कुमार	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री विकास कुमार नं.1	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री दिवाकर राय	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री सुजीत कुमार	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार नं.1	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (संपादक)
श्री राजू कुमार सिंह	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री शंकरा नन्द झा	हिन्दी अधिकारी
मो. दानीश	कनिष्ठ अनुवादक
श्री वीरेन्द्र साहू	कनिष्ठ अनुवादक
श्री अभिषेक कुमार	कनिष्ठ अनुवादक

इस अंक में

क्रम0 सं0	रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
	संदेश			07–08
	संपादकीय			14
1.	मेरे लिए मनुष्य एक सजीव कविता है। –महादेवी वर्मा	आलेख	अभिषेक कुमार	15
2.	मोबाईल और सृजनशीलता	आलेख	राजू कुमार सिंह	18
3.	दीप जले हैं	कविता	जयप्रकाश मल्ल	20
4.	रात	कविता	श्याम दत्त मिश्रा	21
5.	प्रेम विस्तार है और स्वार्थ संकुचन : स्वामी विवेकानंद	आलेख	मो. दानीश	22
6.	जिंदगी	कविता	शिव शरण	24
7.	पर्यावरण का स्वच्छ या अस्वच्छ होने का सीधा असर हमारे जीवन पर पड़ता है –सत्य प्रकाश सिंह	साक्षात्कार	मनोज कुमार नं. 1	25
8.	इंसानियत फिर जीतेगी	कविता	रामौतार प्रसाद	28
9.	जिंदगी का पड़ाव	कविता	मनोज कुमार नं 6	29
10.	प्रकृति, प्रदूषण और हम	आलेख	वीरेंद्र साहू	30
11.	ग़ज़ल और अश'आर	ग़ज़ल	अताउल्ला हुसैन	32
12	ग़ज़ल	ग़ज़ल	रूपेश कुमार सिंह	33
13.	हमारा व्यक्तित्व : हमारे मस्तिष्क की सूचना तकनीक	आलेख	के0 एम0 जयपुरियार	34
14.	अशेष	कविता	विकास कुमार नं.1	37
15.	अवकाश प्राप्त जीवन के निवेश मंत्र	आलेख	सतीश चंद्रा	38
16.	जीने का अर्थ	कविता	हीरा कुमारी	39
17.	एक जमाना हमारा भी था	संस्मरण	रंजीत कुमार वर्मा	40
18.	कौआ पूछें इन्सान से	कविता	दिलीप कुमार अरोड़ा	41
19.	वैलेंटाइन डे–एक आनंदोत्सव	कविता	श्रीमती दिब्या नाथ	42
20.	बचपन के सपने	आलेख	शिव कुमार	43
21.	किसे सुनाऊँ	कविता	विजय कुमार ठाकुर	44
22.	लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह	आलेख	मनोज कुमार नं.-1	45
23.	लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह समापन समारोह की तस्वीरें			47
24.	स्वप्निल की चित्रकारी			48
25.	अताउल्ला हुसैन का व्यंग्य चित्र			48
26.	मिट्टी	कविता	पी० सी० सिन्हा	49
27.	देखा है तुमने	कविता	योगेश कुमार	50
28.	हिन्दी पखवाड़ा 2021 का आयोजन	आलेख	बीरेन्द्र कुमार नं–4	51
29.	हिन्दी पखवाड़ा–2021 की झलकियाँ	फोटो		55
30.	हिन्दी सीखें			61

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार

संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 66 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । हमारा देश विविध भाषाओं और संस्कृतियों का संगम है। इस भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को एक सूत्र में बांधने के लिए एक संपर्क भाषा की आवश्यकता थी जो संविधान द्वारा राजभाषा हिंदी के रूप में प्राप्त हुई है। हिंदी भाषा हमारे भाषाई अंतर को मिटाकर भारतीयता का पूर्ण बोध कराने में सक्षम है ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और कार्यालय के कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को उचित मंच उपलब्ध कराने में 'प्रहरी' की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। आशा है 'प्रहरी' के इस अंक में संकलित सभी उत्कृष्ट रचनाओं से आप सब का न केवल ज्ञानवर्धन होगा, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति अनुराग भी बढ़ेगा। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और रचनाकारों को बधाई देता हूँ, जिनके प्रयासों से इसका प्रकाशन संभव हुआ है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी राजभाषा की प्रगति हेतु इसी प्रकार सकारात्मक भूमिका निभाते रहेंगे।

सत्यमेव जयते
Dedicated to Truth in Public Interest

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

(रामावतार शर्मा)

वरीय उप महालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 66 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु समर्पित इस पत्रिका ने कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। हिंदी भाषा की व्यापक लोकप्रियता और संपर्क क्षमता का समर्थन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व है।

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार कार्यालय में राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु कार्य किए जाते हैं। हिंदी पत्रिका 'प्रहरी', कार्मिकों के सृजनशीलता का माध्यम होने के साथ–साथ राजभाषा के प्रति गौरव का भाव भी हृदय में भरती है, जिससे राजभाषा के प्रचार–प्रसार में सुगमता होती है।

'प्रहरी' के 66 वें अंक के प्रकाशन में योगदान देने हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। आशा है पूर्व की भांति 'प्रहरी' का यह अंक भी राजभाषा की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान करेगा ।

अभिषेक सिंह

(अभिषेक सिंह)

लोकहिताय सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आपका पत्र मिला

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्य प्रदेश, ऑडिट भवन, झांसी रोड, ग्वालियर

दिनांक
25/01/2022

प्रति,

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार,
पटना का कार्यालय

विषय- हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 65 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका "प्रहरी" के 65 वें अंक की प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद। राजभाषा के प्रचार- प्रसार और कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में आपकी पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र एवम् सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, नीतिपरक एवम् रोचक हैं। कवितायें तथा लेख भावपूर्ण, सार्थक व मन को छू लेने वाले हैं । पत्रिका प्रकाशन में आपका कार्य अति सराहनीय है ।

पत्रिका में समाहित रचनाएं यथा श्री के.एम.जयपूरियार की "हमारा आहार, विचार एवं व्यवहार" एक ज्ञानवर्धक एवं विचारणीय लेख है, श्री जयप्रकाश मल्ल की "कविताओं में जीवन" एक अति मनोरम, लयात्मक एवं ओजपूर्ण कविता है, श्री विकास कुमार न.1 की "परमगति" स्वछन्द छंदों में लिखी हुयी खुबसूरत कविता है तथा श्री अजय कुमार झा की "पश्चाताप" एक हृदयस्पर्शी कहानी है जो एक सचरित्र पतिव्रता स्त्री के सम्मान को बल प्रदान करते हुए समाज में कलुषित विचारवाले पुरुषों के दंभ पर चोट करती है । उक्त रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय हैं ।

पत्रिका के सफल संपादन एवम् लगातार प्रकाशन के लिये हार्दिक बधाई । पत्रिका की उतरोत्तर प्रगति की मंगलकामनाओं के साथ...

SANJEEV KUMAR
JHANJI, SAO(Hindi Cell)SKJ, HINDI CELL (AMG-V & Admin)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र
सिविल लाईन्स, नागपुर-440001
OFFICE OF
THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) II
MAHARASHTRA
CIVIL LINES, NAGPUR 440 001
Ph: 0712-2565161-67 / Fax: 0712 – 2560484
Email: agaeMaharashtra2@cag.gov.in
Web: https://cag.gov.in/ae/nagpur/en

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रा.भा.अ./20/जा.क्र.- 74 दिनांक : 21/12/2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बीरचन्द पटेल मार्ग,
बिहार, पटना-800001

महोदय/महोदया,

इस कार्यालय में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह-पत्रिका 'प्रहरी' के पैसठवें(65) अंक की ई-प्रति प्राप्त हुआ है तदहेतु धन्यवाद।

सर्वप्रथम, पत्रिका प्रेषण के लिए सहर्ष सधन्यवाद । पत्रिका मे समाहित सभी रचनाएं रोचक, सुपाठ्य, उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक सामग्री से परिपूर्ण है । सभी रचनाओं में सकारात्मकता, रचनात्मकता, तथा नवीनता को उत्कृष्ट तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका की साज-सज्जा, छायाचित्र प्रशंसा के पात्र है । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ समयानुकूल, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी, तथा शिक्षाप्रद हैं जो बरबस ही पाठक-वृंद को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति)
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL RECEIPT)
ए.जी.सी.आर. भवन, इंद्रप्रस्थ ईस्टेट, नई दिल्ली-110002
A.G.C.R. BUILDING, INDRAPRASTHA ESTATE, NEW DELHI-110002
प्रशासन/राजभाषा अनुभाग

रा.भा.अ./3-18/पत्रिका समीक्षा/2021-22/263 **दिनांक: 27.12.2021**

सेवा में,

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
महालेखाकार भवन, बीरचंद पटेल मार्ग,
पटना, बिहार-800001 ।

विषय: गृह पत्रिका "प्रहरी" के पैंसठवें अंक की ई-प्रति की समीक्षा ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका "प्रहरी" के 65वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, धन्यवाद । पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है तथा सभी रचनाएँ सराहनीय हैं । श्री सतीश चन्द्र, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख "शेयर बाज़ार का आरंभ-वर्तमान संदर्भ के साथ"; श्री रूपेश कुमार सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) की कविता "बाजार" तथा श्री मनोज कुमार, वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख "मोतीहारी से नाता है महान ब्रिटिश उपन्यासकार जॉर्ज ऑरवेल का" रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं ।

आपके कार्यालय की पत्रिका "प्रहरी" का यह अंक, राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में अद्वितीय है । "प्रहरी" की उत्तरोत्तर उन्नति हेतु शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL) CHENNAI

सं प्रनिलेप(के)/हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/139 दिनांक:09.12.2021

सेवा में ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
महालेखाकारभवन,
पटना, बिहार–800 001.

विषय : हिंदी ई-पत्रिका **"प्रहरी"** के 65 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका **"प्रहरी "** के 65 वां अंक इस कार्यालय को ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक है विशेषतः श्री अजय कुमार झा कृत **"पश्चाताप"** मनोरंजक, श्री बीरेन्द्र कुमार कृत **"अकेलेपन और एकांत में है अंतर"** रोचक, श्री रवि प्रकाश कृत **"माँ की याद"** हृदयस्पर्शी एवं श्री पवन कुमार कृत **"साहब यही हकीकत है यह देख के दुनिया हँसती है"** भावपूर्ण हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट, चेन्नै - 600 018. "LEKHA PARIKSHA BHAVAN", 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI - 600 018.
Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91- 044 - 24338924, E.mail : dagacchennai@cag.gov.in

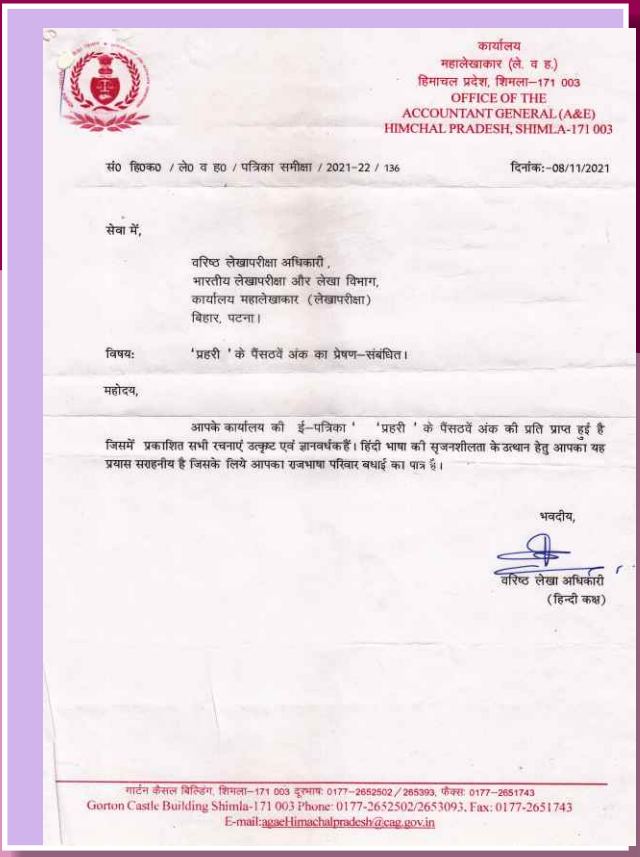

कार्यालय
महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMCHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं0 हि0क0 / ले0 व ह0 / पत्रिका समीक्षा / 2021–22 / 136 दिनांक:–08/11/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना।

विषय: 'प्रहरी ' के पैंसठवें अंक का प्रेषण–संबंधित।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई–पत्रिका ' 'प्रहरी ' के पैंसठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला–171 003 दूरभाष: 0177–2652502 / 265393, फैक्स: 0177–2651743
Gorton Castle Building Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2653093, Fax: 0177-2651743
E-mail:agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

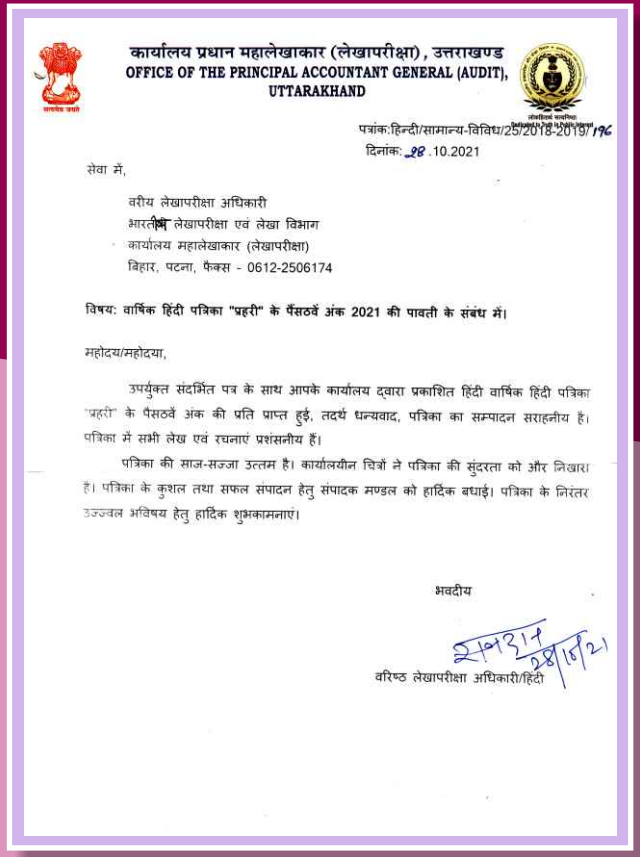

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND

पत्रांक:हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-2019/196
दिनांक: 28.10.2021

सेवा में,

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना, फैक्स - 0612-2506174

विषय: वार्षिक हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के पैंसठवें अंक 2021 की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी वार्षिक हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के पैंसठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

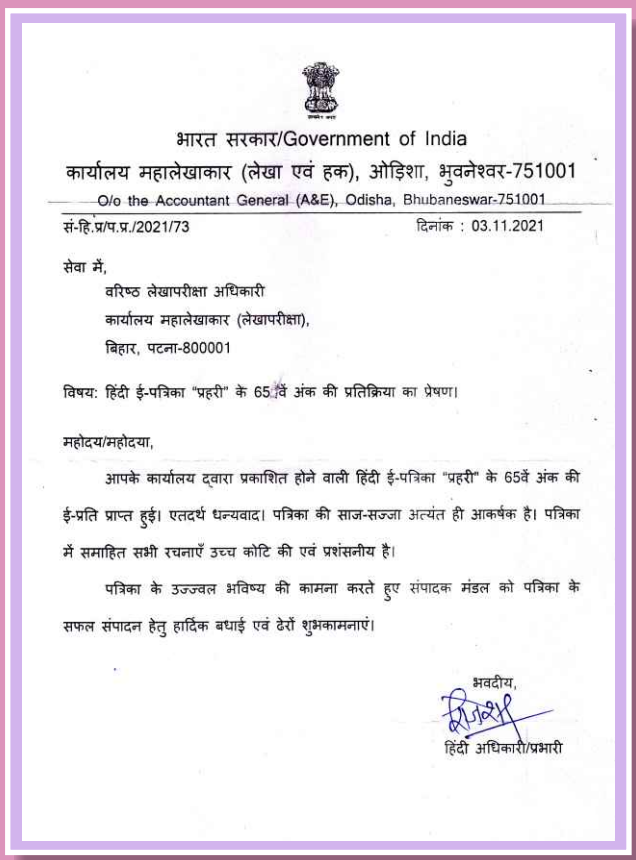

भारत सरकार/Government of India
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), ओड़िशा, भुवनेश्वर-751001
O/o the Accountant General (A&E), Odisha, Bhubaneswar-751001

सं-हि.प्र/प.प्र./2021/73 दिनांक : 03.11.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना-800001

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 65 वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 65वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की एवं प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई एवं ढेरों शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी/प्रभारी

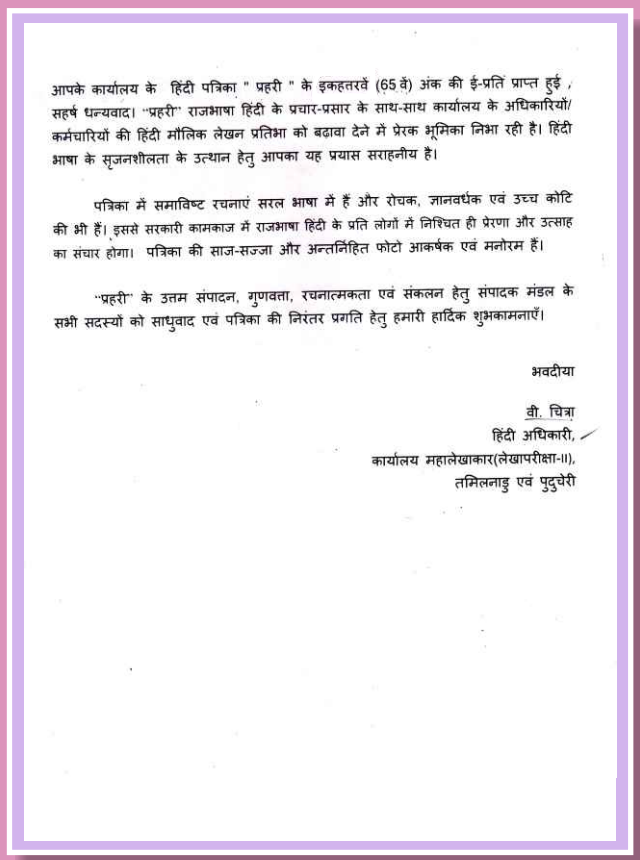

आपके कार्यालय के हिंदी पत्रिका " प्रहरी " के इकहत्तरवें (65 वें) अंक की ई-प्रतिं प्राप्त हुई , सहर्ष धन्यवाद। "प्रहरी" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। हिंदी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं सरल भाषा में हैं और रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च कोटि की भी हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम हैं।

"प्रहरी" के उतम संपादन, गुणवत्ता, रचनात्मकता एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

वी. चित्रा
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

Email

Email **Accountant General Audit Bihar Patna**

हिंदी त्रैमासिक ई-गृह पत्रिका "प्रहरी" के पैंसठवें अंक की पावती ।

From : Uday Pratap Singh <hindicell.kar.ae@cag.gov.in> Fri, Oct 22, 2021 11:52 AM

Subject : हिंदी त्रैमासिक ई-गृह पत्रिका "प्रहरी" के पैंसठवें अंक की पावती ।

To : Accountant General Audit Bihar Patna <agaubihar@cag.gov.in>

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KARNATAKA, BENGALURU

सं.प्र.म.ले.(ले.व.ह.)हिं.क./गृ.पत्रि.पा.प्रे./2021-22/103

दिनांक:11.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),

बिहार, पटना

विषय- हिंदी त्रैमासिक ई-गृह पत्रिका **"प्रहरी"** के पैंसठवें अंक की पावती ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-गृह पत्रिका **"प्रहरी"** के पैंसठवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई । श्री बीरेन्द्र कुमार की कविता 'कोरोना' श्री पी.सी. सिन्हा की कविता 'ऑडिट कार्य' एवं सुश्री अमृता सिंह की कविता 'ऑनलाइन ऑडिट' प्रशंसनीय है । श्री अजय कुमार झा की कहानी 'पश्चाताप' प्रेरक है । पत्रिका में समाहित अन्य सभी लेख एवं कविताएँ भी पठनीय व सराहनीय है।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

भवदीया,

महालेखाकार (ले0 व ह0) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
टेलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172–2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2021-22/158
दिनांक: 21.10.2021

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
पटना ।

महोदय,

विषय : हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 65वें अंक के सम्बन्ध में

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 01.10.2021 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 65वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री के. एम. जयपुरियार का लेख 'हमारा आहार, विचार एवं व्यवहार', श्री अजय कुमार झा का लेख 'पश्चाताप', श्री बिरेन्द्र कुमार का लेख 'अकेलेपन और एकांत में अंतर', एवं श्री मनोज कुमार-1 का लेख 'मोतिहारी से नाता है महान ब्रिटिश उपन्यासकार जॉर्ज ऑरवेल का' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

इसके अतिरिक्त श्री रूपेश कुमार सिंह की कविता 'बाज़ार', श्री विजय कुमार ठाकुर की कविता 'बारिश की बूँदें', श्री जयप्रकाश मल्ल की कविता 'कविताओं में जीवन' एवं श्री विकास कुमार-1 की कविता 'परमगति' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह 21/10

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश,
20, सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

प.सं. हि.अ./पत्रिका/57027 **दिनांक: 20.10.2021**

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
बीरचंद पटेल मार्ग,
पटना -800001

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 65वें अंक की प्राप्ति एवं प्रतिक्रिया ।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 65वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है । संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं । विशेषकर श्री सिद्धेश्वर प्रसाद का लेख "प्रदूषण से प्राकृतिक सम्पदा और मनुष्य का अस्तित्व भी खतरे में", श्री जयप्रकाश मल की कविता "कविताओं में जीवन", श्री अजय कुमार झा की कहानी "पश्चाताप", सुश्री अमृता सिंह की कविता "ऑनलाइन ऑडिट" एवं श्री योगेश कुमार का लेख "टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं ।

पत्रिका कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने के अभियान को सफलतापूर्वक संपादित कर रही है । पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, इसी शुभकामना के साथ आपकी पत्रिका **"प्रहरी"** के उज्ज्वल भविष्य हेतु **"लेखा संगम"** परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

21/10/21

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र. 87
दिनांक:- 21/10/2021

सेवा में,
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी /(हिन्दी),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800001

विषय : हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 65वाँ अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 65वाँ अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद!

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री के. एम. जयपुरियार, वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'हमारा आहार, विचार एवं व्यवहार', श्री विकास कुमार न.01, वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'परमगति' तथा श्री अजय कुमार झा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी(तदर्थ) का लेख 'पश्चाताप' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक हैं।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक पेटी क्र.220, सिविल लाईन्स, नागपुर – 440001
दूरभाष/Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फैक्स/Fax - 0712-2524130

'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : cag.gov.in/ag/nagpur/en
e-mail - agaurnaharashtra2@cag.gov.in

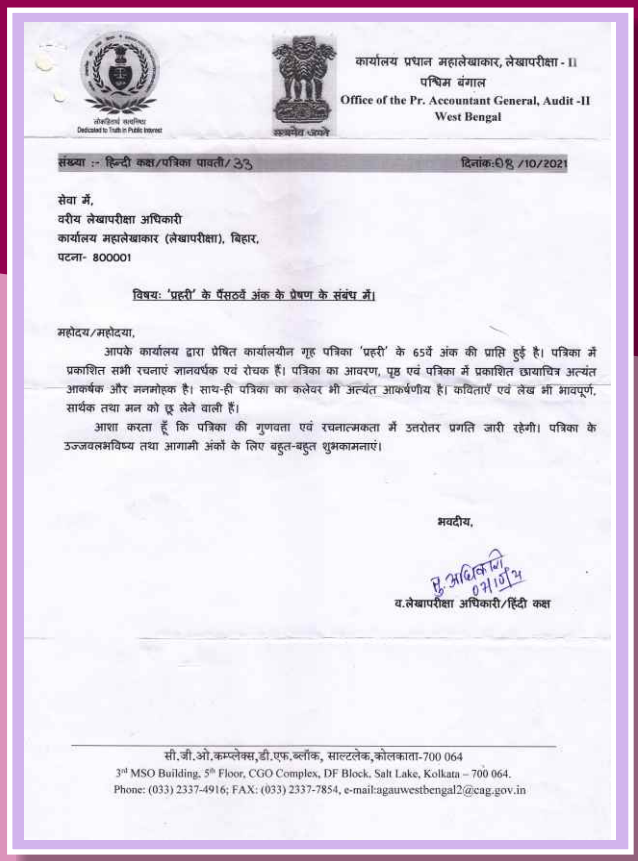

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/ 33 दिनांक:08 /10/2021

सेवा में,
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
पटना- 800001

विषयः 'प्रहरी' के पैंसठवें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित कार्यालयीन गृह पत्रिका 'प्रहरी' के 65वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवलभविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

08/10/21
व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्टलेक,कोलकाता-700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail:agauwestbengal2@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2021-22/327 दिनांक- 12.10.2021

सेवा में,
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
बीरचन्द पटेल मार्ग,
पटना - 800 001

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "प्रहरी" के 65वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका **"प्रहरी" के 65वें अंक** की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित "प्रदूषण से प्राकृतिक संपदा और मनुष्य का अस्तित्व भी खतरे में", "ऑनलाइन ऑडिट", "ऑडिट कार्य", "माँ की याद" आदि रचनाएँ अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

12/10/21
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एंव पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यलय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU **-560001.**

सं.हि.प्रशा.-2021-22/ 129 **दिनांक**-13.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /हिंदी कक्ष,
कार्यालय - महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना,
बिहार - 800001

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई - पत्रिका 'प्रहरी' के पैंसठवें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 05.10.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
बीरचंद पटेल मार्ग
पटना – 800001

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी।
संदर्भ:-आपका पत्र सं.हि.अ./ले.प./प्रहरी/34/2021-22/182 दिनांक 01.10.2021

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **"प्रहरी"** के पैंसठवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट - मांढर, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 25823082 - फैक्स/Fax : 25823505 - ई-मेल/E-mail : agauchhattisgarh@cag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2021/102 दिनांक- 04.10.2021

सेवा में,
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार,
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग,
पटना -800001
ईमेल- agaubihar@cag.gov.in

विषय- हिंदी ई-पत्रिका **"प्रहरी"** के **65वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका **"प्रहरी"** का **65वाँ** अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद । इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं , विशेषकर **अजय कुमार झा** ,सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी(तदर्थ) द्वारा रचित मार्मिक कहानी **'पश्चाताप'** दिल को छू गई । इसके अलावा लेखापरीक्षा पर आधारित **अमृता सिंह**, वरि. लेखापरीक्षक एवं **पी.सी. सिन्हा**, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा रचित काव्य क्रमशः **'ऑनलाइन ऑडिट'** एवं **'ऑडिट कार्य'** भी बहुत अच्छी लगी।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
क..लीय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/143
दिनांक: 06.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

विषय : राजभाषा ई-पत्रिका "प्रहरी" के 65वें अंक की पावती।

महोदय,

पत्र क्रमांक:हि.अ./ले.प./प्रहरी/34/2021-22/182, दिनांक:01.10.2021 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा ई-पत्रिका "प्रहरी" के 65वें अंक की ई-प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्रीमती अमृता सिंह जी द्वारा लिखा गया कविता **'ऑनलाइन ऑडिट'** अत्यंत रोचक है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

कार्यालय महालेखाकार(लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक- रा.भा.क./पत्रिका /कि-18/2018-19/2019-2021/2021-22/ दिनांक- .10.2021

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना, महालेखाकार भवन,
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना-800001
Email id :- agaubihar@cag.gov.in

विषय–कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 65वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।
सन्दर्भ- हि.अ./ले.प./प्रहरी/34/2021-22/Hindi Section/Au./Prahari/34 2021-22/182, दिनांक- 01/10/2021

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका **"प्रहरी"** के पैंसठवें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति हुई, धन्यवाद। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनायें प्रभावशाली रोचक एवं उच्चकोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित की गई श्री जयप्रकाश मल्ल की कविता **'कविताओं में जीवन'**, श्री अजय कुमार झा की कहानी **'पश्चाताप'**, श्री गोपाल कुमार की कविता **'दो कविताएं'**, श्री सतीश चंद्र का लेख **'शेयर बाजार का आरंभ- वर्तमान संदर्भ के साथ'**, एवं श्रीमती अमृता सिंह की कविता **'ऑनलाइन ऑडिट'** विशेष रूप से सराहनीय हैं ।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

हस्ता---

वरिष्ठ लेखाधिकारी/ राजभाषा
कक्ष

दूरभाष/Telephone- 2223251, 2225766, 2224812

फैक्स/ Fax 0612-2225977
तार Tele Gram | ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हिन्दी कक्ष/लेखा/पत्रिका–जवाब/2021–22/58
दिनांक 8/10/2021

सेवा में,

वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी,
कार्यालय महालेखाकार (ले०प०), बिहार,
पटना–800001.

विषय :– हिंदी कार्यालयीन पत्रिका 'प्रहरी' के 65वें अंक के ई–संस्करण का प्रेषण।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 01/10/2021 के द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी कार्यालयीन पत्रिका 'प्रहरी' के 65वें अंक की ई–प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज–सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री जयप्रकाश मल्ल की कविता 'कविताओं में जीवन', रूपेश कुमार सिंह की कविता 'बाजार' एवं श्री भुवन भास्कर का लेख 'जल थल और स्वास्थ्य के लिए घातक प्लास्टिक' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

वरीय लेखा अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

सम्पादक की कलम से.....

प्रिय पाठकों,

प्रहरी के 66 वां अंक की ई – प्रति मोबाइल या लैपटॉप की स्क्रीन पर आपके सामने है। 32 वर्षों के सफर में तकनीक के विकास के साथ प्रथम बार प्रहरी पूर्णतः ई–पत्रिका के रूप में है।

यद्यपि अभी तक हाथों में पत्रिकाएं लेकर पढ़ने वाली पीढ़ी को थोड़ा असहज लगे परंतु नई पीढ़ी जो मोबाइल एवं लैपटॉप के स्क्रीन की आदी हो चुकी है, उन्हें यह रास आएगी, ऐसा मुझे विश्वास है। बदलते समय के साथ इस बदलाव को भी स्वीकार करना ही होगा।

इस अंक में भी कार्यालय कर्मियों एवं उनके परिजनों के आलेख, कविताएं, ग़ज़ल शामिल किए गए हैं। कई अवकाश प्राप्त अधिकारी एवं कर्मचारी भी अपनी रचनाओं द्वारा प्रहरी से लगातार जुड़े हुए हैं जोकि सुखद है। इस अंक में श्री सत्य प्रकाश सिंह वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी से लिए गए एक साक्षात्कार को भी शामिल किया गया है। श्री सिंह कई वर्षों से पर्यावरण के क्षेत्र में काम कर रहे हैं तथा स्वयं हजार से ऊपर पेड़ लगा चुके हैं। उनका यह काम हम सभी को प्रेरणा देता है। श्री राजू कुमार सिंह का आलेख मोबाइल और सृजनशीलता वर्तमान पीढ़ी को सावधान करती है। श्री जयप्रकाश मल्ल की कविता 'दीप जले हैं' सर्वकालिक है। 26 मार्च को महादेवी वर्मा की जयंती पर श्री अभिषेक कुमार का आलेख भी आप सभी को पसंद आयेगी। अन्य रचनाएं भी आपको प्रभावित करेंगी।

साहित्य और कला का प्रथम उद्देश्य लोगों के मनोरंजन, ज्ञानवर्धन के अतिरिक्त समाज में सद्भावना और भाईचारे का विकास करना है और देश की एकता – अखंडता को अक्षुण्ण रखना है। श्री रामौतार प्रसाद की कविता 'इंसानियत फिर जीतेगी' इसी भाव को व्यक्त करती है।

आवरण पृष्ठ पर कार्यालय में आयोजित लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह के समापन समारोह के कार्यक्रम की झलकियों का कोलाज दिया गया है। यह कार्यक्रम प्रथम लेखापरीक्षा दिवस के अवसर पर आयोजित था, जो कि एक ऐतिहासिक कार्यक्रम था।

इस वित्तीय वर्ष 2021– 22 में प्रहरी का दूसरा अंक प्रकाशित हो रहा है, यह खुशी की बात है। इसके प्रेरणा स्रोत महालेखाकार महोदय हैं। उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूं। प्रहरी के परामर्शी अधिकारियों के प्रति भी आभारी हूँ जिनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहा है। सामान्य अनुभाग के मित्रों तथा संपादक मंडल के सदस्यों का भी अपेक्षित सहयोग हमेशा मिलता रहा है। रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता नहीं है। सच तो यह है कि उनकी रचनाएँ ना मिले तो प्रहरी का प्रकाशन ही असंभव होगा । हमारे रचनाकार ही प्रहरी पत्रिका की आत्मा है।

उम्मीद है ई– पत्रिका के स्वरूप में 'प्रहरी' का यह अंक भी आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेगी। आपके प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में..... ।

आपका

(मनोज कुमार)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

जयंती विशेष

‘मेरे लिए मनुष्य एक सजीव कविता है।’ -महादेवी वर्मा

✍ अभिषेक कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

‘आधुनिक मीरा’ के नाम से संबोधित महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के एक संपन्न परिवार में 26 मार्च 1907 ई. में हुआ था। उनकी उच्चतर शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से उन्होंने संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् वे प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्य हो गईं और अंतिम समय तक इस पद पर कार्य किया। महादेवी वर्मा जी का जीवन साहित्य और कला के प्रति हमेशा समर्पित रहा। 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. किया तब तक उनकी दो कविता संग्रह ‘‘निहार’’ तथा ‘‘रश्मि’’ प्रकाशित हो चुकी थी।

इसी वर्ष उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका ‘चाँद’ के संपादन का कार्यभार संभाला । महादेवी वर्मा से महात्मा गाँधी एवं नेहरु जी के बहुत स्नेह भरे संबंध थे। महादेवी जी नितांत गाँधीवादी थी। वह गाँधी जी के आंदोलन से प्रभावित होकर स्त्री शिक्षा का रचनात्मक कार्य करने लगीं। खद्दर की सादी साड़ी पहनकर वे निरलंकार रहने लगीं। प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य के पद पर लंबे समय तक कार्य करते हुए उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयत्न किए।

इन्होंने काव्य के माध्यम से अपने मन की पीड़ा की जो अभिव्यक्ति की है वह वैसी ही है जैसे कि भक्ति काल में मीरा ने की थी।

इसीलिए इनकी तुलना मीरा से की जाती है तथा आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके समाज सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति संवेदना ने उनको प्रभावित किया।

महादेवी वर्मा का कार्य क्षेत्र लेखन, संपादन और अध्यापन रहा । साहित्य में महादेवी वर्मा का आविर्भाव उस समय हुआ जब खड़ी बोली का आकार परिष्कृत हो रहा था। उन्होंने हिन्दी कविता को बृजभाषा की कोमलता दी, छंदों के नये दौर को गीतों का भंडार दिया और भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। इस प्रकार उन्होंने भाषा, साहित्य और दर्शन तीनों क्षेत्रों में ऐसा महत्त्वपूर्ण काम किया, जिसने आनेवाली एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया। उन्होंने अपने गीतों की रचना शैली और भाषा में अनोखी लय और सरलता भरी है, साथ ही प्रतीकों और बिंबों का ऐसा सुंदर और स्वाभाविक प्रयोग किया है जो पाठक के मन में चित्र सा खींच देता है। उनके प्रमुख कृतियों में 'नीरजा', 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा' मानी जाती है। उनकी प्रसिद्ध 'यामा' काव्य संग्रह के लिए साहित्य का सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया था । इसके पूर्व उन्हें अनेक सम्मान एवं पुरस्कार दिए गए। भारत सरकार ने 1956 में पद्म भूषण की उपाधि दी तथा 1988 में मरणोपरांत भारत सरकार की ओर से उन्हें पद्म विभूषण देकर सम्मानित किया गया ।

डॉ कुमार विमल अपने एक आलेख में लिखते हैं कि महादेवी जी कई मायनों में बिहार की बेटी थी, हम सब की बड़ी बहन। उनके पिताजी श्री गोविंद प्रसाद वर्मा कॉलेजिएट स्कूल, भागलपुर में कई वर्षों तक हेड मास्टर थे। इसलिए महादेवी जी अपने पिता और परिवार से मिलन भागलपुर आया करती थी। और लगातार कई दिनों तक रुका करती थी तथा कभी–कभार उस स्कूल के छात्रों को पढ़ा भी दिया करती थी, इसलिए कवित्री के मन में और उसके भाव जगत में बिहार प्रवास का संस्कार रचा बसा हुआ था। उनके लिए बिहार घर नैहर जैसा था।

हिंदी साहित्य का स्वर्ण काल छायावाद है और उसी ने आधुनिक प्रगतिशील और प्रयोगधर्मी साहित्य को जन्म दिया। इस युग में बहुत लेखक और कवि हुए लेकिन जिन्होंने मजबूती से भारतीय साहित्य को व्यापकता दी उनमें चार महान विभूतियां हैं– जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा। महादेवी जी वर्मा के अवसान के बाद हिंदी साहित्य का यह पूरा युग ही समाप्त हो गया। महादेवी जी की काव्य साधना अपने समकालीन लेखकों से एकदम अलग रही। छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृति तत्त्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवधारणा की और पंत ने उसे सुकोमल कला प्रदान की, वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण–प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव–हिलोरों का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजन ही छायावादी कवियों में उन्हें 'महादेवी' बनाता है। वे हिन्दी बोलने वालों में अपने भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद की जाती हैं। उनके भाषण जन सामान्य के प्रति संवेदना और सच्चाई के प्रति दृढ़ता से परिपूर्ण होते थे।

महादेवी वर्मा की साहित्य साधना के पीछे एक ओर आजादी के आंदोलन की प्रेरणा है तो दूसरी ओर भारतीय समाज में स्त्री जीवन की वास्तविक स्थिति का बोध भी है। महादेवी वर्मा के काव्य में सर्वत्र ईश्वरीय सत्ता का समावेश है। उनकी कविताओं में अज्ञातप्रिय का संकेत भी सर्वत्र मिलता है।अपने

काव्य संग्रह 'रश्मि' की भूमिका में वह लिखती हैं कि मेरे लिए मनुष्य एक सजीव कविता है। जीवन की एकता का छिपा हुआ सूत्र ही कविता का प्राण है। विस्मय खोज, प्रेम में तन्मयता, प्रेम की पीर, मिलन का संकेत, प्रिय की सर्वव्यापकता ही उनके काव्य की विषय वस्तु है। यथा–

"कौन तुम मेरे हृदय में,
कौन मेरी कसक में नित मधुरता भरता अलक्षित।
कौन प्यासे लोचनो में घुमड़ घिर झरता अपरिचित।।

आपकी सखी तो वेदना ही है तभी तो आप पीड़ा रूपी प्रियतम (परमात्मा) को प्राप्त करना चाहती हैं। वे कहती हैं–

"परिचय इतना, इतिहास यही,
कल उमड़ी थी मिट आज चली
मैं नीर भरी दुःख की बदली॥

पीड़ा के साथ–साथ उनके हृदय में दया का अथाह सागर भी समाया है। वे व्यक्तिगत पीड़ा को लोक की पीड़ा मानती है। वे करुणा चाहती है तथा करुणा को बिखेरना भी चाहती है। उनके गीतों में करुणा का समावेश इस प्रकार हुआ है–

"तुम दुःख वन बस पथ से आना,
शूलो में नित मृदु पाटल सा।
खिलने देना मेरा जीवन,
क्या हार बनेगा वह जिसने।
सीखा न हृदय को विधवाना॥

गद्य के क्षेत्र में महादेवी वर्मा की एक विशिष्ट शैली है। हिंदी गद्य साहित्य में संस्मरण एवं रेखा चित्र को बुलंदियों तक पहुंचाने का श्रेय महादेवी वर्मा जी को है।'अतीत के चलचित्र','पथ के साथी','स्मृति की रेखाएं' तथा 'श्रृंखला की कड़ियां' इनकी प्रमुख गद्य रचनाएं हैं। उनके संस्मरण और रेखाचित्रों में शोषित, पीड़ित लोगों के प्रति ही नहीं बल्कि पशु पक्षियों के लिए भी आत्मीयता एवं अक्षय करुणा प्रकट हुई है। उनकी भाषा शैली सरल एवं स्पष्ट है तथा शब्द–चयन प्रभावपूर्ण और चित्रात्मक।

निःसंदेह मीरा जैसी प्रेम की पीर महादेवी के अतिरिक्त आधुनिक काव्य में कहीं और नहीं देखी जा सकती है। आज महादेवी वर्मा हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपने भावों तथा विचारों के रूप में उन्होंने जो काव्य एवं गद्य साहित्य हमें प्रदान किया है उसमें मानवीय करुणा, विरह प्रेम वेदना की जो आत्मा तत्व के रूप में प्रतिस्थापित की है उसके कारण हिंदी साहित्य में वे सदा अमर रहेंगी। ✤

मोबाईल और सृजनशीलता

✍ राजू कुमार सिंह
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या आपको याद है कि आपने अंतिम पत्र कब और किसे लिखा था ? आपने कब कागज और कलम का प्रयोग करते हुए भावनाओं के उमड़ते सैलाब को कलमबद्ध किया था ? आपने कब अपने परिवारजनों के बीच खुलकर बातचीत और हास–परिहास का आनंद लिया था ? अगर इन प्रश्नों का उत्तर नहीं में है तो, हो सकता है कि आप कि रचनात्मक प्रतिभा पर मोबाइल का साया पड़ा हो।

आधुनिक प्रौद्योगिकी का आविष्कार मोबाइल मानव के लिए एक वरदान है जो विश्व के किसी भी कोने में वार्तालाप का बहुत ही सशक्त माध्यम है। यह प्रत्येक मनुष्य की जेब की आवश्यकता भी है और इस प्रभावशाली संचार माध्यम ने संसार का आकार सीमित कर मुट्ठी में समेट दिया है। जगत की सारी जानकारियाँ अंगुलियों के स्पर्श मात्र से हाजिर हो जाती हैं परन्तु इस छोटे और शक्तिशाली संयंत्र के स्याह पक्ष भी सामने आने लगे हैं और इसका सीधा प्रभाव हमारी रचनात्मकता पर पड़ा है।

मोबाइल और 4 जी क्रांति का जादुई प्रभाव हम सब पर अप्रत्याशित रूप से पड़ा है। अखिल विश्व स्तर पर इसने अपने पैर मजबूती से जमा लिये हैं । व्हाट्सएप, फेसबुक, इंटरनेट और ट्विटर ने इसे नयी उँचाइयों तक पहुँचाया है । आज अधिकांश व्यक्ति अपने शेष समय को पूरी तरह इसे समर्पित कर चुके हैं और हमारी रचनात्मक क्षमता को इसने कैद कर रखा है । कभी–कभी यह लगता है कि यह साधन न होकर साध्य हो गया है । परंतु सूचना तकनीक की तमाम सुख–सुविधाओं के बावजूद यह हमें शांति और संतुष्टि का अहसास नहीं करा पा रहा है और हमारा स्वाभाविक लेखन बुरी तरह प्रभावित हुआ है।

इसका सबसे बडा प्रभाव पड़ा है हमारे पत्र लेखन की कला पर जो धीरे–धीरे लुप्त होने की कगार पर खड़ी है। डाकिए की प्रतीक्षा में पलक पांवड़े बिछाना और उसके साइकिल की घंटी से उत्पन्न रोमांच अब इतिहास के पन्नों में समा गए हैं। अब लिफाफे के रंग को देखकर खत का मजमून भांपने की नौबत भी नहीं आती । चिट्ठियों के साथ जो मन के कोमल भाव, आवेग आदि जुड़े होते थे, वह इलेक्ट्रानिक संदेश में ढूंढने से भी नहीं मिलते । चिट्ठियों के साथ जुडी उत्सुकता, रोमांच और भावावेग जो हमारे मन में पैदा होते थे वह बंद होते जा रहे हैं।

आधुनिक संचार क्रांति के दौर में हम उन लोगों से भी जुडे रहते हैं जिन्हें न तो हम जानते हैं और न ही पहचानते हैं। घर में सामने बैठे माँ–बाप की बात पर हम कोई प्रतिक्रिया नहीं देते पर फेसबुक और व्हॉटस्अप पर दनादन प्रतिक्रियाएँ साझा कर रहे होते हैं । इसका कारण यह है कि घर में हम मानसिक रूप से नहीं बल्कि केवल शारीरिक रूप से उपस्थित होते हैं। मोबाईल पर अंगुलियों की सक्रियता हमें मानसिक, भावनात्मक और संवेगात्मक रूप से बहुत दूर ले जाती है। इस क्रम में हम भले अपने पड़ोसी को नहीं पहचानते परंतु पूरी दुनिया के लोगों से रू–ब–रू हो रहे होते हैं।

मोबाईल का बहुत ज्यादा उपयोग करने वालों पर इसकी कृपा ऐसी बरसती है कि वे अकेले में ही हंसते , रोते और गुस्सा करते हुए देखे जा सकते हैं। ये लक्षण मानसिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत ही गंभीर, घातक तथा खतरनाक हैं । भले ही हम गुगल देवता के ज्ञानसागर में गोते लगा लें, मानसिक तौर पर आज व्यक्ति बहुत ही कमजोर हो रहा है। उसकी सोचने–समझने व याद करने की शक्ति क्षीण हो रही है। बच्चों में सृजनशीलता, रचनात्मकता तथा बुद्धि की प्रखरता काफी कम हो रही है। धीरे–धीरे मोबाइल की लत हमें इस तरह जकड़ रही है कि व्यक्ति एक आभासी दुनिया में पागल की तरह घूम रहा होता है और व्यवहारिक जगत की वास्तविकता से दूर चला जाता है।

मोबाईल और सूचना प्रौद्योगिकी के उप उत्पाद के तौर पर शारीरिक और मानसिक रोगों की की एक लंबी श्रृंखला सिर उठाये खड़ी है। नींद न आने, भूख न लगने, सिरदर्द, आँखों में जलन, मानसिक थकान, चिड़चिड़ापन, लड़ने–झगड़ने व क्रोधित होने के कई मामले सामने आ रहे हैं । बच्चों में तनाव, चिंता, मानसिक दबाव, चिडचिडापन की वृत्तियां देखी जा सकती हैं । काम की व्यस्तता के कारण कई माताएँ अपने छोटे–छोटे बच्चों के हाथ में मोबाईल थमाकर कार्टून या वीडियो गेम्स लगा देती हैं जो कि बहुत ही हानिकारक है। कोरोना काल में हमें मजबूरीवश ऑनलाइन अध्ययन हेतु बच्चों को मोबाइल देना पडा है । ये सभी आधुनिक जीवन के लिए खतरे की घंटी हैं। अतएव अपने घर–परिवार में अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखें । रात के अंधेरे में कहीं आपका बच्चा कंबल और रजाई में छुपकर चैटिंग तो नहीं कर रहा या फिल्में तो नहीं देख रहा ? भौतिकवादी परिवेश में हमारी आने वाली पीढ़ियां मोबाईल प्रेम से ग्रसित होकर बर्बाद तो नहीं हो रही हैं? अतः देश के युवाओं व अपनी पीढ़ियों के भविष्य को बचाने के लिए अभिभावकों, संस्थाओं, विभिन्न विभागों तथा सरकारों को इस दिशा में प्रभावशाली कदम उठाने की आवश्यकता है।

शहरों के साथ–साथ आज गांव भी मोबाइल के दुष्प्रभाव से अछूते नहीं हैं । दादी–नानी की कहानियां, बच्चों के लिए लोरियां, भाई–बहनों की शरारतें, खुले आँगन से चांद–तारों को निहारना इत्यादि अब कल्पना में ही नजर आते हैं । गांव के हर गली–मोहल्ले के मोड़ पर लोग जमघट लगाया करते थे । नीम, पीपल और बरगद की घनी छांव में सब एकजुट हो कर हर दिन शाम में इकट्ठे बैठकर हंसी–ठहाकों में छोटी–बडी समस्याओं के समाधान निकाला करते थे । लोगों के सुख और दुःख में सभी शामिल होते थे । वर्तमान समय में सर्दियों में अलाव तापना , हर त्योहार को मिल कर मनाना आदि केवल अतीत के यादों में सिमट कर रह गए हैं । गाँव में तेजी से दौड़ती विकास की लहर से आए अप्रत्याशित बदलाव में गांव का अपनापन बहुत पीछे छूट गया है।

यह सत्य है कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और मोबाईल आधुनिक तकनीक का एक महत्वपूर्ण अंग है । परन्तु इसके तेज रफ्तार के कारण बेचैनी, धैर्यहीनता, होड़, दिखावा आदि भी भयावह रूप लेते जा रहे हैं। यह न तो व्यक्ति के हित में है और न ही समाज के इससे पारंपरिक जीवन की लय समाप्त होती जा रही है । इसके दुष्परिणाम से कैसे बचा जाए, हम इसे समझ नहीं पा रहे हैं। हमारा ज्ञान तो बढ़ा है पर उसकी व्यवहारिकता घटी है, हम रचनाकार की भूमिका तो निभा रहे हैं पर उसकी सामाजिक उपयोगिता घटी है, हमारा संपर्क क्षेत्र तो बढ़ा है पर हम अपनी सामाजिकता खोते जा रहे हैं। इसने जितना जोड़ा है उससे कहीं अधिक तोड़ा भी है । सूचना प्रौद्योगिकी के बढते और फैलते संजाल में मानवीय संवेदनाओं, अहसासों और भावों का कोमल सागर सूखने लगा है। फलस्वरूप, जीवन के अरमानों, खुशियों और सुख–दुख के भावों से भरा मन सृजन की बाट खोज रहा है और साथ ही साथ कई कलाओं का अस्तित्व भी दांव पर लगा है। आइए, इस सृजनात्मक क्षमता को पहचानें और उसे अपने वास्तविक स्वरूप में साकार करें। ✤

दीप जले हैं

✍ जयप्रकाश मल्ल
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

अंतस में घनघोर अंधेरा,
बाहर कितने दीप जले हैं।
जाना था किस ओर मुसाफिर
राह बदल कर किधर चले हैं।।

सूनी नज़रें उम्मीदों की,
पथरायी सी देख रही हैं।
श्रम का कोई मोल नहीं है,
आप कहें जो वही सही है।।
खाने को अब नहीं निवाला,
रहने को भी ठौर नहीं है।।

जीवन की हलचल नदारद ,
तन में कितने रोग पले हैं।
अंतस में घनघोर अंधेरा,
बाहर कितने दीप जले हैं।
जाना था किस ओर मुसाफिर
राह बदल कर किधर चले हैं।।

शमां जलती रही रात भर,
परवाने भी दूर खड़े हैं।
ऐसा एकाकी तन मन है,
बिन पराग के फूल खिले हैं।।
अरमानों की जलती होली,
घर घर कैसे मनी दिवाली।।

कौन प्रणय की बात करे अब,
नफरत में दिन रात लगे हैं।
अंतस में घनघोर अंधेरा,
बाहर कितने दीप जले हैं।
जाना था किस ओर मुसाफिर
राह बदल कर किधर चले हैं।।

✣

रात

✍ श्याम दत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

रात ! तुम्हें अक्सर नकारा गया
और सुबह को तरजीह दी जाती रही
तुम्हें कभी अंधेरी,
कभी काली कह कर पुकारा गया
भयानक शब्दों से नवाज़ा गया
जबकि हर सुबह का तुम आगाज हो
सफर में निकलने से पहले का विश्राम हो
कली सो जाती जो बेपरवाह तुम्हारे अंक में
सुबह बन जाती उपवन की बहार वो
रात तुम किसी से कम नहीं
तुम दुल्हन का इन्तजार हो
तुम बच्चों की लोरी
माँ का दुलार हो
तुम मयखाने की रौनक
स्वप्न जगत का प्यार हो
थके हारे मजदूरों की तुम
वृक्ष छायादार हो
सच कहता हूँ रात
तुम भी सुबह की तरह
रसूखदार हो।

प्रेम विस्तार है और स्वार्थ संकुचन : स्वामी विवेकानंद

✍ मो. दानीश
कनिष्ठ अनुवादक

भारतीय चिंतन परम्परा और आधुनिक भारत के जीवंत प्रतिनिधि स्वामी विवेकानंद के उपरोक्त उद्‌गार की व्याख्या के लिए भारतीय दर्शन की उस महान विचार–दृष्टि से परिचित होना नितान्त आवश्यक है ,जो विश्व–कल्याण और मंगलभाव की भावना से ओतप्रोत होकर विकसित हुई और सम्पूर्ण मनुष्यता को एक परिवार या एक ईकाई के रूप में संदर्भित करती है भारतीय दर्शन की अद्वितीय मनीषा ने बहुत पहले ही इस प्रसंग में संस्कृत में एक श्लोक की रचना की थी–

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम
उदारचरितानाम तु वसुधैव कुटुम्बकम"

(महोपनिषद, अध्याय–4, श्लोक–71)

तात्पर्य यह कि यह मेरा है ,यह दुसरे का है ,ऐसी सोच तो संकुचित चित्त वाले व्यक्तियों की होती है ,इसके विपरीत उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह संपूर्ण धरती ही एक परिवार की तरह है।

बताने की जरूरत नहीं है कि इस सुप्रसिद्ध श्लोक की मूल भावना मनुष्यता के उस सार्वभौमिक एकीकरण में निहित है जिसका सूत्र प्रेम, स्नेह, करुणा, सौहार्द्र, और सहृदयता जैसे मनोभावों से जुड़ा होता है। अपने और पराये का भेद वास्तव में हमारी मनोवृत्तियों में बसे उन संस्कारों पर आधारित है जिनका सम्बन्ध पाश्विक प्रवृत्तियों से है। सभ्यता का इतिहास और विकास क्रम इस बात का साक्षी है

कि आदिम मानव से लेकर आधुनिक मानव की उपलब्धियों तक सबमें अन्योन्याश्रयी सम्बन्ध,सहयोगी भावना और सामूहिक एकता की शक्ति का अथक योगदान रहा है। इन प्रयत्नों के मूल में जिस एक भावबोध ने पूर्ण रूप में मानव समाज को

सींचा है वह है प्रेम का भाव। प्रेम अर्थात दया ,ममता करुणा जैसे संवेदी गुणों से ओतप्रोत होना। प्रेम अर्थात 'स्व' को 'परम' में विलीन कर देना ,'व्यष्टि' का 'समष्टि' में समाहित हो जाना।

अपने इन्हीं गुणों के कारण प्रेम ऊँच– नीच के भेदभाव को मिटा देता है,भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण कर देता है और हृदय के भावों का साधारणीकरण कर आध्यात्मिक और मानसिक स्तर पर एक समतामूलक समाज की परिकल्पना को साकार करता है।

इसके उलट स्वार्थ की प्रवृत्ति हमें सिर्फ स्वयं तक सीमित कर देती है। यह लगातार हमारी चिन्तन क्षमता ,अनुभव संसार को सीमित करती जाती है। स्वार्थ की इसी भावना से मनुष्य असामाजिक होता जाता है और अंततः असीमित लालसाओं , अतृप्त इच्छाओं की कुंठा से ग्रसित होकर इर्ष्या, छल, कपट आदि का शिकार बन जाता है।

जहाँ प्रेम हमें परमसत्ता से एकाकार कर देता है तो वहीं स्वार्थ हमें उस सत्ता से विच्छिन्न कर सांसारिक मृगतृष्णा में भटका देता है।

इन्हीं अर्थ संदर्भों की पृष्ठभूमि में स्वामी विवेकानन्द ने प्रेम सम्बन्धी अपने विचारों को प्रकट किया है।''प्रेम विस्तार है ,स्वार्थ संकुचन है इसलिए प्रेम जीवन का सिद्धांत है। वह जो प्रेम करता है जीता है, वह जो स्वार्थी है ,मर रहा है इसलिए प्रेम के लिए प्रेम करो क्यूंकि जीने का यही एकमात्र सिद्धांत है।''

प्रेम की महत्ता को साकार रूप स्वामीजी ने 11 सितम्बर ,1893 को शिकागो की धर्म संसद में अपना संबोधन 'अमेरिका के भाइयों और बहनों' से शुरू कर प्रदान किया। भौतिकता की चकाचौंध में डूबी पश्चिमी दुनिया में पहली बार कोई व्यक्ति अपनी उदार वैचारिकी से पूरब और पश्चिम की दुनिया के मध्य एक ऐसे सशक्त सेतु का निर्माण कर रहा था जिसकी बुनियाद में प्रेम और प्रेमपूर्ण सम्बन्धों का महाभाव अन्तर्निहित था और जिसके प्रभाव से भाषा, रंग, नस्ल, क्षेत्र एवं धर्म के सम्पूर्ण विभेद तिरोहित होकर प्रेम की पवित्रता से आबद्ध हो गये थे। चमत्कृत दुनिया ने यहीं से विवेकानन्द को एक मूर्तिमान भारत ,योद्धा संन्यासी के रूप में पहचानना शुरू किया।

दरसअल स्वामी विवेकानन्द प्रेम के ज्ञान और प्रेम के व्यवहार को इसलिए आवश्यक मानते हैं क्योंकि इसी से संसार और मनुष्यता की भावना गतिमान है। आज जब पूरी दुनिया कोरोना जैसी विनाशकारी महामारी से त्रस्त है तब इन विचारों की महत्ता को आसानी से समझा जा सकता है। इस आपदाकाल में लाखों लोगों की जिंदगियां खत्म हो गयीं , करोड़ों लोग बेरोजगार हो गये ,पूरी दुनिया में उथलपुथल मच गयी। इसके फलस्वरूप मनुष्य मानसिक अवसाद का शिकार होकर हताशा के अँधेरे में खोता जा रहा है। इन नकारात्मक परिस्थितियों में जो संजीवनी मनुष्यता को नयी उर्जा दे सकती है वो निश्चित रूप से प्रेम है। प्रेम ही हमें एक दुसरे को निःस्वार्थ सहयोग करने ,हिम्मत बढ़ाने,परोपकारी बनने तथा दूसरों की भावनाओं को समझने लायक बनाता है।

स्वामीजी के प्रेम सम्बन्धी विचार मनुष्यता की रक्षा के सूत्र हैं और इसीलिए प्रासंगिक भी हैं। वास्तव में प्रेम मानव को हर तरह के बन्धनों से मुक्त करता है और वास्तव में मुक्ति ही 'विस्तार' है। ✤

जिंदगी

✍ शिव शरण
पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)

कुछ लोग आते हैं
आपकी जिंदगी में
बस,
पल दो पल के लिए
मगर दे जाते हैं
सांत्वना के दो शब्द
जब होते हैं आप
निराश और अशांत
फिर ढूंढ लेते हैं ।
एक जुगनू
अंधेरे से लड़ने के लिए
फिर जीत लेते हैं
जिंदगी।

—(शिव शरण 'प्रहरी' के संपादक रह चूंके हैं।)

पर्यावरण का स्वच्छ या अस्वच्छ होने का सीधा असर हमारे जीवन पर पड़ता है -सत्य प्रकाश सिंह

सत्य प्रकाश सिंह, वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं । इन्होंने हजार से अधिक पेड़ स्वयं अपने हाथों से लगाए हैं और इनकी प्रेरणा से अन्य लोगों ने भी पेड़ लगाए हैं । पर्यावरण सरंक्षण हेतु जन चेतना फैलाना और पेड़ लगाना इनका जुनून है । इनकी विशेषता है कि अंकेक्षण के दौरान भी अन्य शहरों में पेड़ लगाने के लिए निरीक्षित कार्यालय के कर्मचारियों को भी प्रोत्साहित करते हैं और पौधारोपण करते हैं। हम साक्षात्कार के माध्यम से उनसे जानेंगे कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनका लगाव और उनका नजरिया क्या है ? –संपादक

सत्य प्रकाश सिंह

संपादकः– आप भारत सरकार में ग्रुप "क" के अधिकारी के पद के उत्तरदायित्व को संभालते हुए पर्यावरण के संरक्षण हेतु किस प्रकार समय निकाल लेते हैं ?

सत्य प्रकाश सिंह :– आपको जो अच्छा लगता है, आप उसे कब करते हैं यह आपको भी पता नहीं लग पाता है और आप उसे कर लेते हैं। पर्यावरण संरक्षण हेतु किसी भी कार्य को करना मेरे लिए एक जुनून–सा हो गया है। मुझे अपने कार्यालय के कार्य को निष्पादित करते वक्त कई लोगों से मिलना होता है इस दौरान उनसे इस विषय पर चर्चा करता हूँ और उन्हें भी प्रेरित करता हूँ ।

संपादक– अब तक आपने कितने पेड़ लगाएं हैं, और कहां–कहां लगाएं हैं तथा कितने प्रकार के पेड़ लगाएं हैं? संक्षिप्त में बताएं।

सत्य प्रकाश सिंह :– अभी तक मैंने हजार से ऊपर पेड़ लगाए हैं और इससे कई गुना दूसरों से लगवाया है। अपने कार्यालय के आवासीय परिसर में, कार्य परिसर के समीप, कुशवाहा आश्रम, हाजीपुर जयप्रकाश

सेतु के नीचे गंगा किनारे, पाटलिपुत्र स्टेशन के पास, राजीव नगर नाला के किनारे, सौहार्द्र इंटरनेशनल स्कूल, बेतिया, गांधी मैदान,पटना, कारगिल चौक एवं अंकेक्षण के दौरान विभिन्न कार्यालयों में, मैंने पौधारोपण

किया है । मैंने आम, अमरूद, जामुन, कटहल, कदम, करंज, कचनार, गुलमोहर, छतवन, अशोक, अर्जुन इत्यादि के वृक्ष लगाए हैं।

संपादकः— स्वच्छ पर्यावरण रखने में सरकार के साथ–साथ आम नागरिक की क्या भूमिका है ?

सत्य प्रकाश सिंह :— पर्यावरण को स्वच्छ रखने में सरकार के साथ–साथ आम नागरिकों की भी भागीदारी होनी चाहिए। आम नागरिकों को अपने आसपास के स्थानों को समय–समय पर साफ करना चाहिए। कूड़े को कूड़ेदान में ही फेंकना चाहिए । सार्वजनिक जगहों पर मल मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए। अपने द्वारा प्रयोग किए गए वस्तुओं के रैपर एवं अन्य अवशेष को कूड़ेदान में ही फेंकना चाहिए।

संपादकः— जन चेतना का कार्य इस संदर्भ में कितना महत्वपूर्ण है?

सत्य प्रकाश सिंह :— जनचेतना बहुत ही आवश्यक है। जब लोग स्वच्छ पर्यावरण के महत्व को समझने लगेंगे तभी वह इसमें भागीदार बनेंगे। पर्यावरण का स्वच्छ या अस्वच्छ होने का सीधा असर हमारे जीवन पर पड़ता है। स्वच्छ वातावरण में हम स्वस्थ एवं खुशहाल रहते हैं।

संपादकः— पेड़ लगाने में आपको किन–किन लोगों से मदद मिलती है?

सत्य प्रकाश सिंहः—पेड़ लगाने में मुझे समाज के भिन्न–भिन्न व्यक्तियों से मदद प्राप्त होती है। मेरे कार्यालय के कुछ सहकर्मी, परिवार के लोग, पड़ोसी, कार्य के दौरान संपर्क में आने वाले लोग पौधारोपण के दौरान मुझे मदद करते हैं।

संपादकः— सरकार का वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग क्या अपने उद्देश्यों में सफल है? अगर नहीं तो किन बातों पर ध्यान देना चाहिए।

सत्य प्रकाश सिंहः— वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग अपने उद्देश्यों में आंशिक रूप से ही सफल हो पाया है। विभाग अपने कार्यों में जनता की भागीदारी

सुनिश्चित किए बिना अपने कार्यों को करता है। समय–समय पर जन जागरण अभियान चलाकर यह बताना आवश्यक है कि सरकार जो कार्य कर रही है, वह लोकहित में है एवं बहुत ही आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले आपदाओं से बचने के लिए यह कार्य अति आवश्यक है।

संपादकः– खराब पर्यावरण का स्वास्थ्य पर क्या–क्या असर पड़ता है?

सत्य प्रकाश सिंहः–जब हमारा पर्यावरण ठीक नहीं रहेगा तब हमें इसके दूरगामी परिणामों को भुगतना पड़ेगा । वायु एवं जल प्रदूषण के कारण कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

संपादकः– कोविड 19 जैसी महामारी एवं स्वच्छ पर्यावरण का कोई संबंध है ?

सत्य प्रकाश सिंह :– यह देखने में आया है कि जो व्यक्ति स्वस्थ थे उन पर कोविड–19 का असर कम हुआ है। पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ भी एक कारण हो सकता है इससे इंकार नहीं किया जा सकता ।

संपादकः–प्रायः देखा जा रहा है कि आजकल पौधारोपण में विभाग की ओर से साज–सज्जा वाले और छोटे पेड़ शहरों में लगाने का प्रचलन बढ़ा है। फलदार पेड़ नहीं के बराबर लगते हैं इसका क्या कारण है ?

सत्य प्रकाश सिंहः– शहरों में फलदार वृक्ष नहीं के बराबर लगाए जा रहे हैं। इसका एक कारण उन वृक्षों पर फल आने पर उनकी निगरानी करना आवश्यक होता है एवं इनके फल को प्राप्त करने की इच्छा में किए गए प्रयासों से दुर्घटना हो सकती है। फलदार वृक्ष वह भी हैं जिनमें कई तरह के पशु–पक्षी रहते हैं एवं उसके फूल एवं फलों का सेवन करते हैं। इन फलों का सेवन मानव नहीं करता है उदाहरण के तौर पर वट, पीपल, गुल्लर, कदम एवं अन्य वृक्ष।

संपादकः– अन्य लोगों को क्या संदेश देना चाहेंगे ।

सत्य प्रकाश सिंहः– पर्यावरण का मतलब होता है हमारे इर्द–गिर्द पाया जाने वाला जीवित और निर्जीव का सही समीकरण। यदि इस समीकरण में हम ऐसा बदलाव करते हैं जिससे एक के लाभ के

ब्रीफ न्यूज

पौधारोपण करते अधिकारी.

निबंधन कार्यालय परिसर में किया गया पौधारोपण

शेखपुरा. गुरुवार को निबंधन कार्यालय परिसर में जिला निबंधन पदाधिकारी स्वीटी सुमन के नेतृत्व में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसके साथ ही उन्होंने लोगों को स्वच्छ एवं साफ वातावरण के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने की अपील की. मौके पे उन्होंने कहा शहर के गिरिहिंडा पहाड़ पर पौधारोपण करने को लेकर हर संभव प्रयास किया जा रहा है. मौके पे कार्यालय का निरिक्षण करने आये वरीय लेखा परीक्षक सत्य प्रकाश सिंह ने बताया कि वह पिछले 3 दिनों से शहर के गिरिहिंडा पहाड़ का भ्रमण कर रहे हैं. जहां उन्होंने अगले 10 सालों के अंदर पूरे पहाड़ को हरा-भरा करने का संकल्प लिया है.

शेखपुरा

लिए बाकियों को हानि होता है तब इस हालत में एक असंतुलन पैदा होता है। जिससे लाभान्वित पक्ष को भी दीर्घ काल में विभिन्न प्रकार के दुष्परिणामों का सामना करना पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण असमय बारिश, भीषण ठंड एवं गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। हम सबको मिलकर अधिक से अधिक पौधारोपण एवं उसका संरक्षण करते हुए बड़े वृक्षों में परिवर्तित करने में भागीदारी बनानी चाहिए। हमें मिलकर साफ–सफाई एवं स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए।

संपादकः– आपने प्रहरी के पाठकों हेतु समय निकाल कर पर्यावरण के संबंध में जो ज्ञानवर्द्धन किया है उसके लिए धन्यवाद।

सत्य प्रकाश सिंह–आपको भी धन्यवाद। ✤

इंसानियत फिर जीतेगी

✍ रामौतार प्रसाद
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

हर इंसान को आज खड़ा होना है
इंसानियत बचाने को,
लोभ, पाप, स्वार्थ,
और हैवानियत हराने को।

असंतोष और निराशा चारों ओर
आज सर्वत्र दिखाई देती है,
विछोह का क्रंदन चारों ओर
आज सुनाई देता है ।

चहुंओर चाहते आज
अपना सिर्फ काम बने,
सामने वाला हो कमजोर
हम सदा बलवान बने।

आइए मिलकर पुनः
एक दिल के हो जाएं,
तेरा–मेरा खत्म कर,
इंसानियत को जिंदा रख पाएं।

जरूरत जब किसी को हो,
दौड़ पड़े सभी मदद को,
इंसानियत सिर उठाकर
हराएगी हैवानियत को।

काली रात मिट जाएगी,
भोर की किरणें बिखरेंगी
सेवा भाव जगायेगी
इंसानियत फिर जीतेगी।

जिंदगी का पड़ाव

✍ मनोज कुमार नं 6
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

जिंदगी में एक ऐसा पड़ाव भी आता है
बड़ों का साया छूट जाता है
बच्चों को कुछ समझ नहीं आता
गिर जाऊं अगर कहीं तो
कौन संभालेगा
यह डर हमेशा सताता है
मां के मरहम लगाकर फूंक मारने से
पिता के सर सहलाने से
बड़ा दर्द भी बेफिक्री से झेल जाता था
अब चार दिन की खाँसी, सर दर्द, पेट दर्द भी
अनजान रोगों की याद दिलाते हैं
घर, कार की किस्तों की तरह
जिंदगी भी किस्तों में बँट जाती है।
बच्चों के भविष्य की चिंता में
अपने वर्तमान को भूल जाते हैं,
जिंदगी में एक ऐसा पड़ाव भी आता है
बड़े–बड़े फ्लैट खरीद कर
कई मंजिला इमारत बना कर
मन को खूब बहलाता है
पर जब घुटनों का दर्द सताता है
शरीर एक कमरे में सिमट जाता है
जिन्दगी में एक ऐसा पड़ाव भी आता है।

प्रकृति, प्रदूषण और हम

✍ वीरेंद्र साहू
कनिष्ठ अनुवादक

पर्यावरण का दूषित होना ही प्रदूषण है। पर्यावरण अर्थात हमारे आसपास की हवा पानी, भूमि, ध्वनि अगर शुद्ध हो तो हमारा भौतिक और मानसिक विकास सही होगा और हम स्वस्थ रहेंगे। लेकिन अगर हमारे आसपास की हवा दूषित हो जाए, पानी जहरीला होने लगे, भूमि का उपजाऊपन समाप्त हो जाए, ध्वनि का शोर इतना बढ़ जाए कि कान के पर्दों को हानि पहुँचाने लगे तो मानव जीवन पर संकट उत्पन्न हो सकता है। प्रदूषित वातावरण की ही देन ग्लोबल वार्मिंग है । जिससे उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर जमा बर्फ के पहाड़ अगर पिघलने लगे तो कई देश जल प्रलय में डूब जाएंगे। यानी प्रदूषण को ना रोका गया तो मानव अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। प्रदूषण को रोकने में हमें तभी सफलता मिलेगी जब इसके कारणों को हम समझेंगे जैसे जनसंख्या में बेतहाशा वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों का वैज्ञानिक दोहन, असंतुलित आर्थिक विकास, शहरों में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था का अभाव, वनों का विनाश, उर्वरक और कीटनाशक दवाओं का अत्यधिक प्रयोग, तीव्र और कर्कश ध्वनि यंत्रों का प्रयोग, चिमनियों से निकलती जहरीली गैसें, शिक्षा का अभाव इत्यादि। अगर हमें पर्यावरण को मानव के लिए सुरक्षित बनाना है तो इन सभी कारणों को दूर करना होगा। यह काम केवल सरकार का ही नहीं है बल्कि हम सभी को यह काम जनभागीदारी से संभव करना होगा। आइये, हम सभी पर्यावरण को बचाने के लिए अपनी जिम्मेदारी को निभाए।

- ☞ एक पेड़ काटने से पहले दो पेड़ अवश्य लगाएं।
- ☞ सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करें।
- ☞ परिवार को छोटा रखें।
- ☞ लोगों को ग्लोबल वार्मिंग के कारणों के प्रति जागरूक करें।
- ☞ खेतों में जैविक खादों जैसे गोबर कंपोस्ट का अधिक उपयोग करें।
- ☞ कर्कश स्वर वाले प्रेशर और ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग कम करें।

इसी प्रकार, सरकार के स्तर से भी कई काम किए जा रहे हैं।

- ✦ लकड़ी के विकल्पों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- ✦ सार्वजनिक परिवहन को अधिक से अधिक बढ़ावा देना चाहिए और उसका विकास करना

चाहिए।

- ✦ जैसे मेट्रो ट्रेनों और बैटरी चालित वाहनों को बढ़ावा देना चाहिए।
- ✦ सड़कों की नियमित सफाई, भवन एवं सड़क निर्माण स्थलों पर पानी के छिड़काव पर भी ध्यान देना चाहिए।
- ✦ रसायनिक उर्वरकों को चरणबद्ध तरीके से कम किया जाना चाहिए।
- ✦ पॉलिथीन का बेधड़क प्रयोग को बंद करना चाहिए ।
- ✦ कल – कारखानों से निकलने वाली विषाक्त गैसों को फिल्टर करने का प्रबंध करना चाहिए।
- ✦ इसी तरह, तरल अपशिष्ट एवं गंदे नाले के पानी की सफाई के बाद नदियों में प्रवाहित करने का समुचित प्रबंध हो।
- ✦ 'छोटा परिवार शिक्षित परिवार' रखने के लिए जनमत बनाना चाहिए।
- ✦ कर्कश पटाखों तथा कर्कश ध्वनि यंत्रों को नियंत्रित करना चाहिए।

यद्यपि, सरकार कई काम कर रही है। भारत सरकार का स्वच्छ भारत अभियान इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । पर्यावरण को सुरक्षित रखकर ही मानव जीवन के अस्तित्व को बचाए रखा जा सकता है।

✤

✍ अताउल्ला हुसैन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

ग़ज़ल

हर शख़्स को अब तबीब[1] बनाएंगे
सरे–महफिल[2] अपनी ग़ज़ल सुनाएंगे

जो पन्ना मुड़ा रहा डायरी में बरसों
वो कागज़ कोरा था सबको बताएंगे

रस्सी दस्तयाब[3] होती है बआसानी[4]
लिहाज़ा[5] पंखा थोड़ा ऊंचा लगाएंगे

दोस्त तोहफे में आईना दे गए हैं
एक दिन उन्हें भी आइना दिखाएंगे

आसां है मिरे क़ातिलों की शिनाख्त[6]
वो मैय्यत[7] पर ज़्यादा आंसू बहाएंगे

1. इलाज करने वाला
2. सब के सामने
3. प्राप्त होना
4. आसानी से
5. अतः
6. पहचान
7. लाश

अश'आर

प्यार से सजाइए दिलों में दर्द को
आख़िर ये सौग़ात[1] किसी आशना[2] का है

वो शख्स जो मिला है फरेबी[3] है क्या
कहता है ज़रूरत पर याद कर लेना

पलटो ना कभी मेरी, ज़िंदगी की किताब
खुशबू बिखेर देगा इक सूखा हुआ गुलाब

सांसो को खो कर तुझे पा रहे हैं
ज़िन्दगी तेरी क़ीमत चुका रहे हैं

ढकना हो ग़म को गर मुस्कुराहट से
आंखों को भी थोड़ा फरेब[4] सिखाइये

1. उपहार
2. परिचित
3. ठग / मक्कार
4. छल

ग़ज़ल

✍ रूपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

जुर्म यह सभी किया करते हैं,
खुद से खुद को ही जुदा करते हैं।

जिंदगी जार जार रोती है,
जब भी हम खुद से दगा करते हैं।

आप कर देंगे बेवफा सबको,
आप क्यों इतनी वफा करते हैं।

दुश्मनी ने तो सब को लूटा है,
दोस्त अब कम ही मिला करते हैं।

दिल के रिश्तों के तार टूटे तो,
गांठ लेकर ही जुड़ा करते हैं।

तू न आएगा जानते हैं पर,
हम तेरी राह तका करते हैं।

हमारा व्यक्तित्व : हमारे मस्तिष्क की सूचना तकनीक

✍ के0 एम0 जयपुरियार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

आधुनिक विज्ञान के अनुसार हमारा मस्तिष्क हमारे केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र का नियंत्रण केन्द्र है जो हमारे आचरणों का नियमन एवं नियंत्रण करता है। यह मानव शरीर का सबसे जटिल अंग है जो अरबों कोशिकाओं से बना है। वास्तव में हमारा जन्म एक अलग व्यक्तित्व के रूप में होता है और जैसे– जैसे हमारे मस्तिष्क का विकास होता है उसी अनुरूप हमारा व्यक्तित्व भी तैयार होता है।

परन्तु, वास्तव में, हमारा मस्तिष्क मात्र सूचनाओं का सग्रंहण, विश्लेषण एवं प्रकटन करने का काम करता है, यह ठीक उसी प्रकार होता है जैसे एक आधुनिक कम्प्यूटर। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हम सभी कम्प्यूटर के कार्य करने की विधा से भली–भांति परिचित हैं। एक कम्प्यूटर वास्तव में सूचनाओं का संग्रहण, उनका विश्लेषण एवं उसे व्यक्त करने का कार्य करता है जिसे हम सामान्य तौर पर अंग्रेजी में इनपुट , प्रोसेस और आउटपुट कहते हैं। ठीक इसी प्रकार, हमारा मस्तिष्क भी यही काम करता है।

हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ वास्तव में सूचनाओं को मस्तिष्क तक पहुँचाने का काम करती है और मस्तिष्क इन्हें अपने अंदर सग्रंहण करता चला जाता है। हम जो भी देखते है, जो भी सुनते हैं और जो भी अनुभव करते वो सभी सूचनाओं के रूप में हमारे मस्तिष्क में संग्रहित रहते हैं और इसकी संग्रहण क्षमता इतनी है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं क्योंकि यह उन सभी सूचनाओं को, जो भी इस तक पहुँची हो, अपने अंदर समाहित करता चला जाता है जो मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक सतत रूप से होता रहता है। और यह आधुनिक कंप्यूटर से अलग बस इतना है कि इसकी सग्रंहण क्षमता असिमित है ।

ये संग्रहित सूचनाएँ इसके तीन अलग–अलग हिस्से जिसे योग विज्ञान में चेतन, अवचेतन और अचेतन कहा गया है, में अवस्थित रहती हैं और साथ ही आवश्यकतानुसार इसका उर्ध्व और अनुगामी प्रवाह होता रहता है। वास्तव में हमारी उपस्थिति अथवा हमारी पहचान हमारे चेतन मस्तिष्क की सूचनाओं की उपलब्धता के आधार पर होती है क्योंकि ये वह स्थान है जहाँ हम इनका विश्लेषण कर परिस्थितिजन्य आवश्यकताओं के अनुरूप इन्हें प्रकट करते हैं। और यह प्रकटन ही हमारे व्यक्तित्व का परिचायक होता है।

जिन सूचनाओं का हम उपयोग नहीं कर रहे होतें है वे धीरे–धीरे हमारे अवचेतन मस्तिष्क की ओर चली जाती हैं जिसे थोड़े प्रयास से हम पुनः अपने चेतन मस्तिष्क में ला सकते हैं परन्तु अचेतन मस्तिष्क की सूचनाओं को चेतन तक लाना लगभग असंभव है और यह मात्र एक सिद्ध योगी के लिए ही संभव है। अगर चेतन मस्तिष्क हमारी जागृत अवस्था है तो अवचेतन निद्रा और अचेतन मूर्च्छा की अवस्था का द्योत्तक है।

इस प्रकार बिना किसी सूचनाओं के हमारा मस्तिष्क ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार माँ के गर्भ से निकला हुआ एक अबोध बालक जिसमें जीवन के लिए उपयोगी कुछ मूलभूत सूचनाएँ ही समाहित होती हैं जैसे एक कंप्यूटर को ऑन करने के लिए बूटिंग से संबंधित आवश्यक कुछ फाइल्स। एक मानव शरीर जैसे–जैसे बड़ा होता जाता है वह सूचनाओं को संग्रहित करता जाता है और उसका व्यक्तित्व निखरता जाता है। उदाहरण के लिए एक बच्चे को लाल रंग को हरा कह कर दिखाया जाय तो इसे वह हरा ही समझेगा क्योंकि इस रंग के लिए उसके मस्तिष्क में यही सूचना संग्रहित करा दी गयी है। इसे एक दूसरे उदाहरण से भी समझा जा सकता है– जैसे हमें अगर हिन्दी आती है और जापानी भाषा नहीं आती तो हम जापानी भाषा को एक आवाज की तरह मात्र सुनेगें और उसपर कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पायेंगें क्योंकि इस भाषा के संबंध में हमारे मस्तिष्क को सुचनाएँ अप्राप्त है।

चुंकि इन सूचनाओं का सग्रंहण एक सतत प्रक्रिया है अतः यह समय के साथ अपनी गति से चलता रहता है । परन्तु अगर हम अपने व्यक्तित्व को निखारना चाहतें हों तो हमें वैसी सुचनाएँ जो एक सार्थक जीवन के लिए उपयोगी हैं, को अपने अंदर ग्रहण करते रहना होगा। हमारे मस्तिष्क के अंदर सग्रंहित सूचनाओं के प्रकार हमारे व्यक्तित्व को आधार प्रदान करतें है। चुंकि मस्तिष्क के सूचना संग्रहण की क्षमता असीमित है और यह उन सभी सूचनाओं को जिसे इसके ज्ञानेन्द्रियों ने इस तक पहुँचाया है, बिना इसके गुण–दोष को जाँचे अपने अन्दर समाहित करते चला जाता है, अतः हमारे व्यक्तित्व को किसी समाज के लिए अच्छा या बुरा होना उस बात पर निर्भर है कि इसके अंदर उस समाज के अनुसार किस प्रकार की सूचनाओं की अधिकता है और किस प्रकार की सूचनाएँ उसके चेतन मस्तिष्क में हैं। अर्थात्, अगर हम उस विधा के जानकार हो जाएं जिससे कि हम अपने चेतन मस्तिष्क की सूचनाओं में परिवर्त्तन कर सकें तो यह हमारे व्यक्तित्व में परिवर्त्तन का कारण बन सकता है।

ठीक इसी प्रकार अगर हम किसी के मस्तिष्क में अपने अनुसार सूचनाएँ डाल सकें तो भी उसके व्यक्तित्व को अपने आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर सकते हैं।

कहा जाता है कि बिहार योग विद्यालय के संस्थापक स्वामी सत्यानंद जी ने अपने शिष्य एवं उत्तराधिकारी स्वामी निरंजनानन्द जी को बचपन में ही योग की विभिन्न विधाओं के माध्यम से मात्र तेरह वर्ष की आयु में सभी शास्त्रों का ज्ञान प्रेषित कर दिया था अर्थात उनके मस्तिष्क में वांछित सूचनाओं को स्थापित करा दिया था। ठीक इसी प्रकार महाभारत में वर्णित है कि भगवान कृष्ण और बलराम उस आयु में गुरू सांदीपनी के गुरूकुल पहुँचे जिस आयु में बालक पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर गुरूकुल से विदा लेते हैं क्योंकि वे गुरूकुल की आयु में तो वृन्दावन में गैय्या चराया करते थे। अतः ऋषि सांदीपनी ने योग विद्या से अपने पास की सारी शिक्षा दोनों भाइयों के मस्तिष्क में हस्तांतरित कर दिया। अर्थात उनके स्वयं में मस्तिष्क की सूचनाओं को कृष्ण और बलराम के मस्तिष्क में हस्तांतरण। परन्तु ऐसा करना दो बातों पर निर्भर है एक तो सूचनाओं का प्रतिस्थापित कराने वाले का ज्ञान और ऐसा करने की विधा की जानकारी और दूसरा जिस मस्तिष्क में इसे संप्रेषित किया जा रहा है उसका इस योग्य होना। यह ठीक वैसा ही है जैसे कि किसी विशेष कम्प्यूटर में किसी विशेष कंप्यूटर भाषा में प्रोग्राम का लिखना।

अतः हमारा व्यक्तित्व हमारे मस्तिष्क में संग्रहित सूचनाओं के आधार पर प्रकट होता है बस अंतर इतना है कि बढ़ती उम्र के साथ इन सूचनाओं का विश्लेषण करने की क्षमता बढ़ती है परन्तु फिर शरीर के वृद्धावस्था के साथ यह क्षमता भी घटती जाती है। परन्तु सूचनाओं का विश्लेषण भी सूचनाओं की उपलब्धता पर निर्भर होता है अर्थात् सूचनाओं का विश्लेषण कुछ और नहीं बल्कि हमारे मस्तिष्क में उपलब्ध सूचनाओं के बीच अंतर या मिलान करना होता है। इसे ऐसे समझा जा सकता है कि एक व्यक्ति को हत्या करना पाप दिखता है जबकि दूसरे को नहीं। क्योंकि जिसने इसे पाप समझा उसका मस्तिष्क वैसी सूचनाओं की अधिकता है जो हत्या के दुष्परिणामों को बताती है परन्तु जिन्होंने इसमें पाप नहीं देखा उनमें या तो इसके पाप नहीं समझने की सूचनाएँ अधिकता में है या फिर इसके दुष्परिणामों से संबंधित सूचनाओं का अभाव है ।

परन्तु इन सूचनाओं का मस्तिष्क के अलग–अलग हिस्सों अर्थात चेतन, अवचेतन और अचेतन में प्रवाह, जो सतत चलता रहता है, को नियंत्रित करना कुछ अन्य बातों के अलावे हमारे शरीर की वर्तमान स्वास्थ्य की स्थिति पर भी निर्भर होता है जिसके लिए योग की विभिन्न विधाएँ हैं। अर्थात हमें एक अच्छे व्यक्तित्व के स्वामी होने के लिए एक तो अधिक से अधिक अच्छी सूचनाओं को संग्रहण करते रहना चाहिए और साथ ही इन्हें चेतन मस्तिष्क में अवस्थित रखने का प्रयास करना चाहिए और इसके लिए अधिक से अधिक स्वाध्याय, देशाटन, सज्जनों की संगति और आत्म निरक्षण और इन सबके अलावा संग्रहित सूचनाओं का विश्लेषण करने के लिए एक स्वस्थ शरीर का भी होना अतिआवश्यक है तभी हम एक अच्छे व्यक्तित्व के स्वामी हो सकते हैं।

अशेष

✍ विकास कुमार नं.1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

सोच
चाहे वह रणनीतिक हो
या कूटनीतिक
या हो
कपोल कल्पित
या
सामरिक हो या आर्थिक
या हो फिर
व्यक्तिवादी या रूढ़िवादी
राष्ट्रवादी हो या उदारवादी.....।
यथार्थ के धरातल पर
टकराते हैं जब
झंझावातों में जैसे
टकराती सूखी डालियाँ
चटकती हैं चिंगारियाँ
और
जाती है फैल उजास
चहुँओर.....।
कि
जीवन अभी शेष है
कि
समर अब भी शेष है.....।
दर्प –द्वन्द्व.....अंतर्कलह या अभिमान
और पलता वैमनस्य
परिणति जिसकी
पलायन, विनाश,सर्वत्र–संग्राम
आर्त्तनाद, चीत्कार और द्वेष–क्लेश।
फिर भी
मानवता अब भी शेष है.....।
माना
घटा है घनघोर
छायी चहुँओर
घुप्प है नैराश्य
रूदन में विलापता हास्य
फिर भी
शेष है.....
आशा की भोर।
यांत्रिक क्रुरता के मध्य
सांसों की डोर।
अब भी शेष है.....
जीवन अब भी अशेष है.....
अशेष है जीवन।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अवकाश प्राप्त जीवन के निवेश मंत्र

✍ **सतीश चंद्रा**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, (सेवानिवृत्त)

आम तौर पर अवकाश प्राप्त लोग अपने निवेश के प्रति ज्यादा सचेत रहते हैं क्योंकि उन्हें अपने निवेश की सुरक्षा पर बहुत अधिक ध्यान रहता है फिर भी, सामान्य निवेशक की तरह उन्हें भी अपने प्राप्त धन का सुरक्षित निवेश करना पड़ता है जो निम्न प्रकार से हो सकते हैं –

सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम (SCSS) का इस्तेमाल कर सकते हैं। जिसमें 60 साल से अधिक उम्र के लोगों को फायदा मिलता है। स्कीम एस.सी.एस.एस के अंतर्गत भारत के किसी भी अधिकृत बैंक या पोस्ट ऑफिस में खोला जा सकता है और सीनियर सिटीजन अधिकतम 15 लाख रुपये तक की राशि निवेश कर प्रति माह पेंशन के रूप में रू. 9250 प्रतिमाह प्राप्त कर सकते हैं ।

जबकि प्रधानमंत्री वय वंदना योजना (PMVVY) केंद्र सरकार की सीनियर सिटीजन की हीं योजना है जो भारतीय जीवन बीमा द्वारा संचालित है। उपरोक्त के समान ही यह स्कीम 60 साल से अधिक उम्र के लोगों को निवेश करने और बाद में पेंशन पाने की सुविधा देती है। इस स्कीम में रुपये 15 लाख जमा करने पर प्रति माह पेंशन के रूप में रू. 9250 प्राप्त किया जा सकता है।

बैंक की फिक्स्ड (मियादी) जमा जिसमें निश्चित अवधि में निश्चित राशि प्राप्त होने की गारेंटी होती है। इस प्रकार के निवेश में लाभ अधिक नहीं होता है साथ ही जोखिम भी नहीं रहता है। बैंक एफडी सबका पसंदीदा प्लान है। हालांकि नियमित आय के लिए जरूरी है सही एफडी प्लान का चयन किया जाय।

बहुत से लोग म्यूचुअल फंड में राशि जमा करते हैं। इस प्रकार के निवेश में कंपनियों द्वारा प्राप्त राशि शेयर बाजार में निवेश किया जाता जिसमें जोखिम के साथ लाभ की संभावना अधिक होती है। म्यूचुअल फंड्स सेवानिवृत्त लोगों को जरुरत के मुताबिक तरलता का विकल्प देते हैं, सही समय में लिये गए म्यूचुअल फंड में चाहें तो सिस्टमेटिक विड्रॉल प्लान (SWP) को अपना सकते हैं। SWP को रिटायरमेंट बाद पैसे कमाने का अच्छा साधन माना जाता है। SWP म्यूचुअल फंड से एक निश्चित राशि निश्चित अन्तराल में प्राप्ति की सुविधा देता है।

इनका नगदीकरण भी आसान और प्रभावशाली है। नियमित रूप से एक तय रकम निकालने के लिए वह सीमित अवधि के डेट म्यूचुअल फंड में एसडब्लूपी शुरू किया जा सकता है।

बहुत से अवकाश प्राप्त लोगों के लिए शेयर बाजार भी उपयोगी हो सकता है। जिन्हें इसकी पूर्ण जानकारी है वे लोग अपनी पूंजी का निश्चित भाग शेयर बाजार में निवेश कर सकते हैं, जिससे उन्हें अधिक जोखिम के साथ अच्छा लाभ प्राप्त होने की प्रबल संभावना भी रहती है साथ ही उनका समय भी सही ढंग से व्यतीत होता है।

उपरोक्त के अलावा अच्छे जीवन शैली बनाये रखने के लिए कुशल वित्तीय प्रबंधन के साथ–साथ आकस्मिक खर्चों के लिए नगद की भी सुविधा रखनी चाहिए ताकि भविष्य की सुरक्षादीप जलता रहे साथ ही निवेश के पूर्व निवेश के पेशेवर सलाहकारों से सलाह लेनी चाहिए।

✤

जीने का अर्थ

✍ **हीरा कुमारी**

कुछ होते हैं लड़ने वाले
कुछ होते हैं डरने वाले
कुछ होते हैं इस दुनिया में
घुट घुट कर जीने वाले

कुछ दुश्मन से लड़कर
दुश्मन को दूर भगाते हैं
कुछ दुश्मन के डर से
घरों में दुबक जाते हैं

डर कर ही जीना है तो
वह जीवन किस काम का
घुट घुट कर जीना है तो
वह जीवन किस नाम का

चलो उठो प्रतिरोध करो
निज ऊर्जा का संचार करो
दुश्मन अगर खड़ा है आगे
दुश्मन का संहार करो

जीवन का कुछ अर्थ गहो
समझो जिससे यह व्यर्थ न हो
बाधाओं से जो डरते हैं
जीते जी वह मरते हैं

स्वयं में जो वशीभूत रहें
औरों की हालत क्या जाने
स्वार्थ लिप्सा पूरित दिल
औरों से दिल मिलाना क्या जाने।

नूतन प्रसून मसलने वाले
उपवन बसाना क्या जाने
वैभव के जो हैं दीवाने
वे प्रेम जताना क्या जाने ।

द्वारा **तरुण कुमार सिंह**
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

एक जमाना हमारा भी था

✍ रंजीत कुमार वर्मा
कल्याण सहायक

हमारा भी वह दिन था हर साल नयी कक्षा में जाते थे तब उसके पहले किताब कॉपी के ऊपर रद्दी पेपर का जिल्द चढ़ाते थे और यह काम एक वार्षिक उत्सव या त्योहार कि तरह होता था । साल की पढ़ाई खत्म होने के बाद किताबें बेचना और अगले वर्ष की पुरानी किताबें खरीदने में हमें किसी प्रकार की शर्म नहीं होती थी क्योंकि तब हर साल न किताब बदलती थी और ना ही पाठ्यक्रम बदलना था । हमें खुद ही स्कूल जाने के लिए तैयार होना पड़ता था क्योंकि बस रिक्शा से भेजने की रीत नहीं थी। स्कूल जाने के बाद कुछ अच्छा बुरा होगा ऐसा हमारे मां पिताजी सोचते भी नहीं थे क्योंकि हम जानते थे कि अगर स्कूल टीचर ने शिकायत कर दी तो बड़े भाई, पिताजी के द्वारा भरपुर पिटाई की जाएगी । कभी–कभी तो स्कूल टीचर, घर के टीचर द्वारा भी जबरदस्त कुटाई की जाती थी। कपड़े की थैली एलमुनियम के पेटियों में किताबें, कॉपियाँ बेहतरीन तरीके से जमा कर रखने में हमें महारत हासिल थी। किताबों में पीपल के पत्ते, मोर पंख, माता सरस्वती के बाल रखकर हम होशियार हो सकते हैं, ऐसी हमारी धारणाएँ थी। पास या फेल यही हमको मालूम था । परसेंटेज से हमारा कोई संबंध नहीं था। स्कूल में टीचर के हाथ से मार खाना सजा के तौर पर मुर्गा बनना, कान लाल होने तक मरोड़े रखना, पेंसिल को दोनों अंगुलियों के बीच में फंसा कर दबा कर रखने में कभी हमारा ईगो आड़े हाथ नहीं आता था। सही बोलो तो ईगो क्या होता था हमें मालूम नहीं था। घर और स्कूल में मार खाना भी हमारे जीवन की सामान्य प्रक्रिया थी। किसी दोस्त को साइकिल के आगे पीछे कैरियर पर बिठाकर गली गली घूमना हमारा दिनचर्या था। कभी दोस्तों के साथ गोली, गिल्ली – डंडा, पिट्ठो और ना जाने ऐसी कई पुराने खेलो को खेल कर शाम ढल जाती थी। बिजली कटने पर भी मोहल्ले के सारे बच्चे इकट्ठे होकर खूब मस्ती करते थे। पिताजी के कार्यालय से आने के पहले हम लोग पढ़ने बैठ जाते थे और ऊँची आवाज में पढ़ाई कर यह बताने की कोशिश करते कि हम पढ़ रहे हैं।

हमने कभी पॉकेट मनी माँगी ही नहीं और पिताजी ने दी भी नहीं इसलिए हमारी आवश्यकता भी छोटी सी ही थी। कभी कभार कुछ पैसे मिल जाते थे उसमें ही हम खुश हो लेते थे । कभी हम अपने माँ पिताजी को यह बता ही नहीं पाए कि हम आपको कितने प्रेम करते हैं क्योंकि उस समय फादर डे या मदर डे का कोई प्रचलन नहीं था।

पर्व त्यौहार में पिताजी सभी भाइयों को एक ही तरह के कपड़े लाकर सिलवा कर देते थे। इस तरह कपड़े पहनने के बाद भी हम लोग को कोई शिकायत नहीं रहती थी। आज हम दुनिया के असंख्य धक्के खाते हुए और संघर्ष करती हुई दुनिया का एक हिस्सा हैं।

किसी को जो चाहिए था मिला और किसी को कुछ मिला कि नहीं क्या पता ? स्कूल के बाहर चूरन बेचने वाले की दुकान, टॉफी लट्ठा, पाचक चटपटी खिलाने वाले दोस्तों की कृपा हमें याद है । वे दोस्त कहाँ खो गए कुछ पता ही नहीं । दुनिया में कहीं भी हम रहें यह सच है कि हम वास्तविक दुनिया में बड़े हुए हैं और हमारा वास्तविकता से सामना वास्तव में ही हुआ है । अंत में कह सकता हूं कि हम अच्छे थे या बुरे थे नहीं मालूम पर हमारा भी एक जमाना था। ✤

कौआ पूछें इन्सान से

✍ दिलीप कुमार अरोड़ा
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

कौआ पूछें इन्सान से
तेरा नानक उसका राम,
औरों का भी है कोई भगवान ?
तेरा है तो मेरा कौन ?
मेरा नहीं तो तेरा कैसे?
मान ले बंदे
जो तेरा है वो मेरा है,
जो मेरा है वही तो तेरा है।
तू मेरा मेरा करता है,
और झगड़े में तू फँसता है।
मान ले बंदे
है कोई एक अदृश्य शक्ति,
जो चला रही ब्रह्माण्ड को।
ना कर उसका नामकरण तू,
मत बाँट उसे तू अपने लिए।
तू जैसे– जैसे बढ़ता है
नासमझी में जकड़ता है,
खुद को होशियार समझता है।
वो एक है,
इतना भी नहीं समझता है।
ना तूने उसको देखा है,
ना मैंने उसको देखा है,
तू फिर भी चित्रण करता है।
हम भी चित्रण करने लग जाए,
तो सोच कैसा चित्रण होगा ?
मान ले बंदे वो एक है,
एक है और एक ही है।

वैलेंटाइन डे-एक आनंदोत्सव

✍ श्रीमती दिब्या नाथ

आँख खुली तो पाया हमने,
चहुँ धूम मची वैलेंटाइन की ।
तो इस बार अपने आप सखी,
कलम मेरी फिर थिरक उठी ।।
सोचा इस दिन को तो,
हमने भी मनाया होगा ।
जब कन्यादान के बाद उन्होंने ,
हाथ हमारा थामा होगा ।।
गृह प्रवेश हुआ नयी दुल्हन का,
पीहर पीछे छूट गया ।
सासू माँ के आशीर्वचनों ने,
ससुराल से नाता जोड़ दिया ।।,
उनकी दिव्य छवि में हमने
जब मइया को फिर से पाया होगा ।
तब उस क्षण में और उसी पल में,
वैलेंटाइन तो हमने भी मनाया होगा ।।

परिजनों के स्नेहाशीष से
फिर हमारी नाव चली ।
आप खेवइया थे पतिदेव तो,
मैं उस नौका की पतवार बनी।
जब हम दोनों ने मिलकर न जाने
कितने तूफानो के रुख को मोड़ा होगा,
तब उस सुकून में हमनें निश्चित ही
वैलेंटाइन मनाया होगा ।।

फिर आई ममता की बारी,
बोतल डायपर से हो गई यारी ।
संयम, धैर्य छूट न जाए
नींदे आँखों से उड़ी हमारी ।।
तब तुमने आगे बढ़कर ,
कंधा अपना बढ़ाया था ।
तब जाकर तो मैंने भी
ताज माँ का पाया था ।
और वैलेंटाइन तो हमने
तब भी मनाया था ।।
यदि पीहर की इस राजकली ने
ससुराल में बाग लगाया है ।
अपने सुदर्शन व्यक्तित्व से प्रतिदिन
तुमने , मेरे मायके का मान बढ़ाया है ।।
तो सुनो प्रिय एक बात अभी,
वैलेंटाइन कहीं और नहीं ।
जीवन का है उल्लास यहीं,
है हास यहीं परिहास यहीं ।।
पाए प्रभु कृपा जगत की हर जोड़ी,
दिब्या की है अरदास यही ।।

—द्वारा—श्री सुभाष वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बचपन के सपने

✍ **शिव कुमार**
एम.टी.एस

जब किसी घर में किसी बच्चे का जन्म होता है तो उस समय उस घर में काफी खुशियाँ मनाई जाती हैं। उस घर में उस बच्चे का लालन –पालन शुरू होने लगता है। धीरे–धीरे वह बच्चा बड़ा होने लगता है साथ ही समयानुकूल वह दुनिया की हर वस्तु से अवगत होने लगता है। एक ओर जहाँ उस बच्चे के माता पिता अपने बच्चे से भविष्य में कई आशाएँ एवं अपेछाएँ संजोने लगते है तो दूसरी ओर वह बच्चा अपने लिए खुद सपने संजोने लगता है। कुछ ऐसे भी बच्चे होते हैं जो अपने सपनों को माता–पिता के सपने का साथ जोड़कर उसे भविष्य में पूरा करना चाहते हैं। उन सपनो में कुछ सपने ऐसे भी होते हैं जिन्हें वो तुरंत प्राप्त करना चाहते हैं मगर कुछ सपने ऐसे भी होते हैं जिन्हें वो भविष्य में समयानुकुल प्राप्त करना चाहते हैं। तुरंत प्राप्त करने वाले सपने को हम इस प्रकार से उस बच्चे की इच्छा के रूप में इस प्रकार से समझ सकते हैं जैसे नये–नये कपड़े पहनना, नयी–नयी जगहों पर जाना, स्वादिष्ट पकवान एवं मिठाइयाँ खाना आदि। भविष्य में प्राप्त करने वाले सपने को हम मूल रूप से बच्चे के सपने के रूप में इस प्रकार से समझ सकते है जैसे बड़े होकर अमुक आदमी के जैसा बनाना, अमुक कार्य करना आदि। इनमे से जो वर्तमान स्थिति है वो लगभग पूरी हो ही जाती है मगर जो बाद की स्थिति है वह उस बच्चे के घर–परिवार , समाज एवं उसके रहन सहन के परिवेश पर अधिक निर्भर करता है।

प्रत्येक माता–पिता अपने सामर्थ्य – क्षमता अनुसार अपने बच्चों को वह हर सुख सुविधाएँ प्रदान करना चाहते हैं, जो दुनिया में अन्य बच्चो को वह सुविधा मिलती है। साथ ही, वो अपने बच्चों के सकारात्मक सोच को भी सफल करने का प्रयास करते हैं। प्रत्येक इंसान के बचपन में पढाई को ज्यादा महत्त्व प्रदान किया गया है। ऐसा माना जाता है की बच्चे की पढाई पर ही उसका भविष्य निर्धारित होता है। कुछ बच्चे पढ़ने में कमजोर होते हैं तो कुछ पढ़ने में मेधावी होते हैं, इन्हीं दो आधारों पर बच्चा खुद अपने आप में अपने भविष्य सम्बन्धी अनेक सपने देखना शुरू करता है जिन बच्चों को पढ़ने में मन नहीं लगता है वे बड़े होकर कुछ इस प्रकार का कार्य करना चाहता है जैसे–क्रिकेटर बनना , नेता बनना या समाज सुधारक या अन्य कार्य जो उसे अच्छा लगे। जो बच्चे मेधावी होतें है वह ज्यादातर सरकारी सेवक, समाज सेवक एवं अन्य प्रतिष्ठित कार्य को भविष्य में करना पसंद करते हैं। समय व परिस्थिति के हिसाब से उन बच्चों की जिंदगी भी करवटे बदलती रहती है। कभी–कभी तो यह देखने को मिलता है कि जो बच्चे कभी पढाई में कमजोर थे वह बड़े होकर सफल इंसान बन गए जबकि जो बच्चे मेधावी थे वे बड़े होकर अपने सपने को पूरा नहीं कर सके।

परिणाम स्वरूप देखा जाए तो प्रत्येक इंसान चाहे वो सफल हो अथवा असफल अपने जीवन के कुछ पलो को अपने बचपन की यादो में ले जाता है और यह विचार करने लगता है की बचपन के वो सपने कितने अच्छे व सुहाने थे और इन्हीं यादों के साथ मुस्कुराते हुए अपने जीवन के पथ पर आगे चलने लगता है। ✤

किसे सुनाऊँ

✍ विजय कुमार ठाकुर
लेखापरीक्षक

किसे सुनाऊँ कौन सुनेगा,
मेरे मन की है ये व्यथा।
होती है मन में कुछ बात
जिसे सुनाना चाहता है हर कोई।

धरती माँ करे चित्कार
आतंकी और अराजकतावादी
फैला रहे हैं अव्यवस्था चारों ओर
होता है एक एहसास दर्द का।

सुपुत्र जब बन जाता है कुपुत्र
आदर की जगह हो जाता है अहंकार,
खुशी और सुख देने की जगह देता है दर्द
इतना सब होने पर भी देता है खुशी।

आओ हमसब मिलकर सुने पुकार
हर दर्द को मिटा खुशियों से भर दे दामन
दर्द न रहे कोई, अपना फर्ज निभाए
अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते जाए

ऐसा ही कुछ कर दिखाएँ,
एक नए भारत का निर्माण करें,
जहाँ हो सच्चाई और ईमानदारी
हर चेहरे पर लाएँ खुशहाली।

गर्व हो अपनी भारत माँ पर
ना रहे कोई दर्द, शिकायत हम से
कदम से कदम मिलाकर साथ चलें
ऐसा करें कुछ काम
जिससे दुनियाँ करे सलाम।

लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह

✍ **मनोज कुमार नं.-1**
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

महालेखाकार भवन में दिनांक 16 नवंबर 2021 से 22 नवंबर 2021 तक लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर पूरे सप्ताह कई कार्यक्रम किए गए। जिसमें अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिया । इन कार्यक्रमों में चित्रकला प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम प्रमुख था। समापन समारोह दिनांक 22 नवंबर 2021 को बहुउद्देशीय हॉल में संध्या 6:30 बजे आयोजित किया गया था। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बिहार विधान परिषद के सभापति श्री अवधेश नारायण सिंह, बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा, वित्त विभाग बिहार सरकार के तत्कालीन अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, प्रधान महालेखाकार श्री पी के सिंह, महालेखाकार श्री रामावतार शर्मा, वरीय उप महालेखाकार श्री मुकेश कुमार लाल एवं श्री अभिषेक सिंह तथा उप महालेखाकार श्री आदर्श अग्रवाल, सुश्री पुष्पलता, श्री शिव शंकर एवं श्री मनमीत कुमार उपस्थित थे। इस अवसर पर उत्तर मध्य रेलवे हाजीपुर के निदेशक श्री अजहर जमाल भी उपस्थित थे।

समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर बिहार विधान परिषद के माननीय सभापति एवं बिहार विधानसभा के माननीय अध्यक्ष और बिहार सरकार के अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ प्रधान महालेखाकार एवं महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने संयुक्त रूप से किया। सभी मान्य अतिथियों तथा दर्शकों का स्वागत एक उद्बोधन नृत्य से किया गया जिसे श्रीमती सुदिपा घोष ने प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर विधान परिषद के सभापति ने अपने संबोधन में कहा सरकारी विभागों के बीच वित्तीय मामलों को लेकर सतर्कता जरूरी है। समय–समय पर ऑडिट होते रहना चाहिए। इससे गड़बड़ी का पता चलता है। वित्तीय अनुशासन बनाए रखने और अनियमितता के प्रति सजगता बनाए रखने के लिए ऑडिट जरूरी है। बिहार विधान सभा के माननीय अध्यक्ष ने कहा कि सीएजी लोक धन का प्रहरी है। ऑडिट के महत्व पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि इसे जीवन में भी अपनाना चाहिए। जिससे आत्मीय सुख की ओर कदम बढ़ाएंगे और यह आने वाली पीढ़ी को सुखद और आनंदित करेगा।

महालेखाकार महोदय ने अपने संबोधन में सभी मान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि सुशासन के प्रतिबद्धता को कायम करने के लिए हम अपनी गतिविधियां कर रहे हैं। सीएजी संस्था 160 वर्ष से ज्यादा पुरानी संस्था है जो इतनी वर्षों के अनुभव के साथ अपनी कार्यप्रणाली को इस प्रकार से बनाया है कि वह आज भी प्रासंगिक है।

प्रधान महालेखाकार महोदय ने इस अवसर पर चाणक्य के अर्थशास्त्र को उल्लेखित करते हुए लेखा, राजस्व इत्यादि पर प्रकाश डाला और लेखापरीक्षा के उपादेयता पर विस्तार से बताया।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अतिथियों के उद्‌गारों के बाद दो नृत्य नाटिकाएं प्रस्तुत की गयी। सुभूमि शीर्षक से प्रस्तुत नाटिका में भारत की भूमि की भूरी भूरी प्रशंसा की गई और देश के कर्मठता ईमानदारी जैसे नैतिक मूल्यों को मजबूत कर देश को और अधिक सुंदर बनाने की झाँकी प्रस्तुत की गई।

दूसरी नृत्य–नाटिका का भाव था स्वास्थ्य अनमोल धन है। यह अनमोल धन स्वच्छ हवा, स्वच्छ जल पा कर ही संभव है। प्रकृति के सुंदर और स्वच्छ पर्यावरण को हम हमेशा बनाए रखें। दोनों नृत्य नाटिकाओं ने दर्शकों का मन मोह लिया। नृत्य–नाटिकाओं की निर्देशिका श्रीमती सुदिपा घोष थी।

कार्यक्रम के अंत में श्री अभिषेक सिंह, वरीय उप महालेखाकार द्वारा सभी आगत अतिथियों तथा दर्शकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का मंच संचालन श्री मनोज कुमार वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी ने किया तथा श्री राजीव कुमार सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

प्रेस की कतरनें

राज–पाट प्रभात

वित्तीय मामलों को लेकर सभी सरकारी विभागों में सतर्कता की जरूरत : अवधेश

- ऑडिट वित्तीय प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए जरूरी : विजय कुमार सिन्हा

संवाददाता ▷ पटना

महालेखाकार कार्यालय के सभागार में ऑडिट सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन किया गया. इस मौके पर विधान परिषद के कार्यकारी सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि सभी सरकारी विभागों को वित्तीय मामलों की ऑडिट करने को लेकर विशेष सतर्कता बरतने की जरूरत है. वित्तीय अनुशासन बनाये रखने और अनियमितता के प्रति सजगता बनाये रखने के लिए ऑडिट की प्रक्रिया बेहद आवश्यक है. विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि ऑडिट वित्तीय प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है. महालेखाकार

ऑडिट सप्ताह के समापन समारोह में विधान परिषद के कार्यकारी सभापति व विधानसभा के अध्यक्ष.

रामअवतार शर्मा ने स्वागत भाषण दिया. उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी ने प्रत्येक वर्ष 16 नवंबर को ऑडिट दिवस मनाने की शुरुआत की थी. इसी के तहत यह ऑडिट जागरूकता सप्ताह मनाया जा रहा था. मौके पर वित्त विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रवीण कुमार सिंह, वरीय उपमहालेखाकार मुकेश लाल, डिप्टी एजी आदर्श अग्रवाल, अभिषेक सिंह, उपमहालेखाकार पुष्पलता, अजहर जमाल, ललित शंकर मिश्रा आदि मौजूद थे.

Rural Works Department

विभागों के बीच वित्तीय मामलों को लेकर सतर्कता जरूरी है : सभापति

सिटी रिपोर्टर | पटना

विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि सरकारी विभागों के बीच वित्तीय मामलों को लेकर सतर्कता जरूरी है। समय-समय पर ऑडिट होते रहना चाहिए, इससे गड़बड़ी का पता चलता है। सोमवार को सभापति लेखा परीक्षा सप्ताह की समाप्ति के अवसर पर महालेखाकार कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। वहीं, विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि सीएजी लोक धन का प्रहरी है। ऑडिट के महत्व का समझाते हुए उन्होंने कहा कि इसे जीवन में भी अपनाना चाहिए। इस दौरान आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा के विजेताओं को सम्मानित किया गया। कला, संस्कृति एवं युवा विभागों के कलाकारों से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मौके पर प्रधान महालेखाकार प्रवीण कुमार सिंह, महालेखाकार रामावतार शर्मा, वित्त विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. एस सिद्धार्थ, वरीय उप महालेखाकार मुकेश लाल, अभिषेक सिंह, पुष्पलता और ललित शंकर मिश्र आदि उपस्थित थे।

लोक
Dedicated t

लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह समापन समारोह की तस्वीरें

स्वप्निल की चित्रकारी

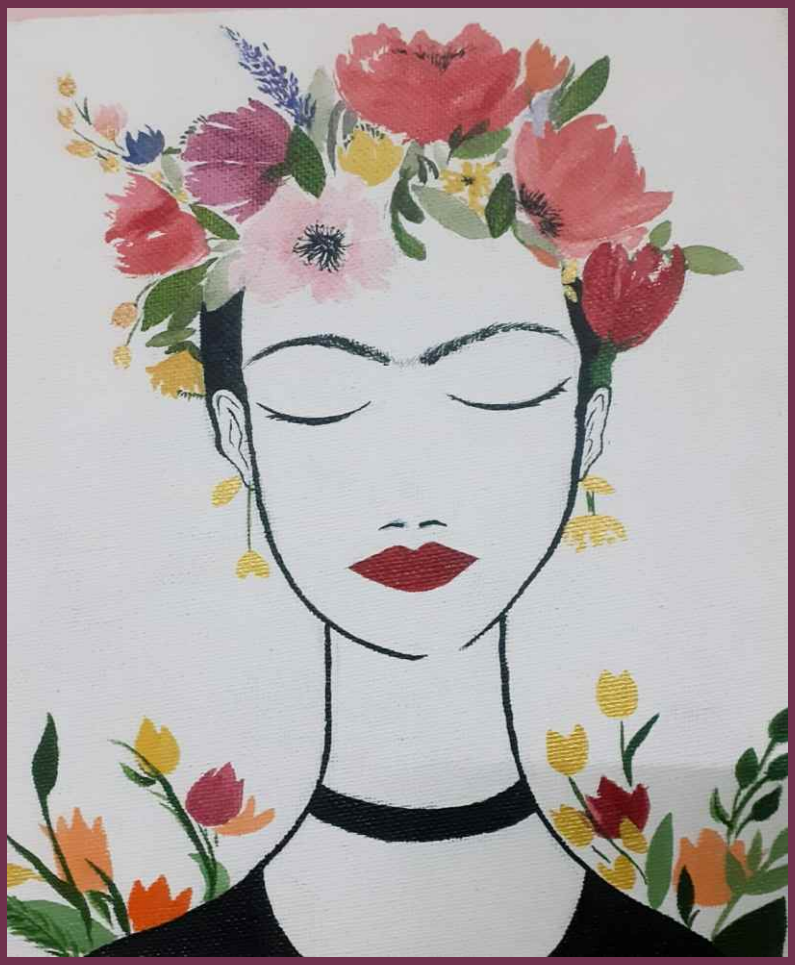

स्वप्निल शाश्वत
सुपुत्री श्री विकास कुमार नं–1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

अताउल्ला का व्यंग्य चित्र

✍ **अताउल्ला हुसैन**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(तदर्थ)

मिट्टी

✍ पी० सी० सिन्हा
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

मिट्टी का नहीं कोई मोल
मिट्टी है बहुत ही अनमोल

मिट्टी ही अपनी पहचान है
हटते ही लगता विरान है

खींचती है यह अपने पास
रो देते जब छूटता साथ

मिट्टी ही जीवन का सार
प्रारंभ–अंत का है सुत्रधार

अग्नि जल वायु का आधार
मिट्टी से मिलता है आहार

मिट्टी पर ही बनता आवास
मिट्टी से जो उपजे कपास

तन को रखे सुरक्षित साफ
मिट्टी जीवन का है मूलमंत्र

है यही तन – मन – धन
मिट्टी नहीं हो जिसके पास

उस जीवन का नहीं कोई आधार
जोड़े मिट्टी रिश्तों का डोर

संघर्ष भी कराये ये घनघोर
जो जानता है इसका मोल

बना लेता है जीवन अनमोल
पंचतत्व का बना यह शरीर

बन जायेगा मिट्टी की धूल
मिट्टी है जीवन का मूल
मिलना है पुनः इसमें समूल।।

देखा है तुमने

✍ **योगेश कुमार**
सहायक पर्यवेक्षक

गुलाबी जाड़े में
सुनहरी सुबह की
गुनगुनी धूप
को देखा है तुमने
जेठ की भरी दोपहरी में
बरगद की छाँव के बीच
अलसाती पुरवईया को
देखा है तुमने कभी
सावन की पहली
फुहार के बाद
सूखी मिट्टी के कणों में बसी
सोंधी खुशबू को
देखा है तुमने
नदी के पार्श्व में फैले
क्षितिज से
उगते सूर्य की
सुनहरी किरणों को
देखा है तुमने
ढलान पर खड़े
ऊँचे पेड़ो के बीच
डूबते सूर्य का
तार्म लोहित रंग
देखा है तुमने

सुर्ख गुलाब की
पंखुड़ियों पर पसरी
ओस की बूँदे को
देखा है तुमने
अबोध शिशु की
मासूम मुस्कान
भगवान पर
चढ़ाये गये
पूजा के फूल की पवित्रता
को देखा है तुमने
नहीं देखा तो
देख लो
एक बार
सिर्फ एक बार
आईने में
अपने को देख लो।

हिन्दी पखवाड़ा 2021 का आयोजन

✍ श्री बीरेन्द्र कुमार नं–4
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना कार्यालय के अगुवाई में हिन्दी पखवाड़ा–2021 का आयोजन कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना तथा कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,पटना के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक–01.09.2021 से दिनांक–14.09.2021 तक के बीच मनाया गया। इस दौरान दोनों कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक हिन्दी में कार्य करने का सराहनीय प्रयास किया । पखवाड़ा को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए एक हिन्दी पखवाड़ा समिति–2021 का गठन किया गया था। इसमें लेखापरीक्षा कार्यालय के कुल 4 सदस्य यथा श्री मनोज कुमार नं– 1 (वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी),श्री बीरेन्द्र कुमार नं–4 (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी), श्री अरुण कुमार (वरिष्ठ अनुवादक), श्री वीरेन्द्र साहू (कनिष्ठ अनुवादक) तथा प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी), बिहार,पटना कार्यालय के कुल 3 सदस्य श्री उमेश कुमार चौधरी(वरीय लेखा अधिकारी), श्री वंशीधर मिश्रा(वरीय लेखा अधिकारी) एवं अजय कुमार सिन्हा (वरीय लेखा अधिकारी) शामिल थे। समिति के संयोजक श्री मनोज कुमार नं–1 (वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी) थे। पखवाडा के दौरान कुल 7 विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ एक पूर्ण दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया था। वित्तीय वर्ष 2020–21 में जिन कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा कार्यालयीन कार्य (कम से कम 20 हजार शब्द) हिन्दी में किया गया हो, उनसे हिन्दी पुरस्कार योजना के अंतर्गत आवेदन आमंत्रित किया गया था । उक्त प्रतियोगिताओं में विजेताओं की घोषणा हेतु एक निर्णायक मंडल–2021 तथा मूल्यांकन समिति–2021 का गठन किया गया था । निर्णायक मंडल में दोनों कार्यालयों से कुल 18 अधिकारी सम्मिलित थे। लेखापरीक्षा कार्यालय से निर्णायक मंडल में कुल 9 वरीय लेखापरीक्षा अधिकारियों सर्वश्री दिवाकर राय, विनय कुमार नं–2 , सुबोध कुमार नं–1 , विजय प्रकाश गुप्ता, अंजनी कुमार, मनोज कुमार नं–1 , पंकज कुमार शर्मा ,रविकांत पटेल एवं श्रीमती सुनीता कुमारी तथा प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार,पटना कार्यालय से कुल 9 वरीय लेखा अधिकारियों सर्वश्री अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय, शंभु दयाल ,उमेश चौधरी ,वीरेन्द्र कुमार सिंह, संजय कुमार नं–3, दीपक कुमार, वंशीधर मिश्रा एवं दीपक कुमार नं–1 नामित किये गये थे।

हिन्दी पखवाड़ा–2021 का उद्घाटन समारोह दिनांक 01.09.2021(11:30 बजे पूर्वाह्न) को सभागार, प्रथम तल में मनाया गया। मंच का संचालन श्री मनोज कुमार नं–1 वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी ने

किया। समारोह का प्रारंभ प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार,पटना के कर कमलों से दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। तत्पश्चात सरस्वती वंदना श्री भारत कुमार पाण्डेय (लेखापरीक्षक) द्वारा प्रस्तुत की गयी । तदोपरांत स्वागत भाषण श्री मुकेश कुमार लाल, वरीय उप महालेखाकार (ले. एवं ह.) ने दिया। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार(ले. एवं हक.) महोदय ने भावोद्गार प्रकट किया एवं कार्यालय के सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को कार्यालयीन कार्य शत् प्रतिशत हिन्दी में करने हेतु अनुरोध किया । श्री श्रीराम पाण्डेय ने कोरोना काल में खोये हुए अपनो की याद में करुणापूर्ण प्रस्तुति से उपस्थित श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

अंत में श्री अभिषेक सिंह, वरीय उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया ।

दिनांक–01.09.2021 से दिनांक–13.09.2021 तक विभिन्न विषयों के अंतर्गत कुल 7 प्रतियोगितओं का आयोजन किया गया। हिन्दी पुरस्कार योजना के अंतर्गत लेखापरीक्षा कार्यालय के कुल तीन कर्मचारियों, अधिकारियों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार क्रमशः श्री प्रमोद कुमार (वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी), श्री रंजन कुमार सिन्हा (पर्यवेक्षक) तथा श्री अशोक कुमार (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी) को दिए गए। अन्य प्रतियोगिताओं में निम्न प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया ।

पखवाड़ा का समापन समारोह–सह हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन दिनांक–14.09.2021

क्र.सं.	दिनांक	प्रतियोगिता का नाम	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
1.	02.09.2021	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता	श्री सन्नी सिन्हा सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री अशोक कुमार (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी) लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री सौरभ कुमार सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) लेखा एवं हकदारी कार्यालय
2.	03.09.2021	अनुवाद प्रतियोगिता	श्री राकेश कुमार रंजन सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री विपिन कुमार सहायक लेखाअधिकारी (तदर्थ) लेखा एवं हकदारी कार्यालय	श्री सन्नी सिन्हा सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) लेखापरीक्षा कार्यालय
3.	07.09.2021	प्रारूप लेखन एवं संक्षेपण प्रतियोगिता	श्री निरज कुमार गुप्ता गुप्ता लेखापरीक्षक लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री सौरभ कुमार सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) लेखा एवं हकदारी कार्यालय	श्री सन्नी सिन्हा सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) लेखापरीक्षा कार्यालय
4.	08.09.2021	हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता	संयुक्त रूप से श्री कृष्ण मुरारी जयपुरियार वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्री मनोज कुमार नं.-6 वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री राकेश कुमार रंजन सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री सन्नी सिन्हा सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) लेखापरीक्षा कार्यालय
5.	09.09.2021	कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता	रंजय कुमार शर्मा लिपिक लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री धर्मेन्द्र कुमार डी.ई.ओ. लेखा एवं हकदारी कार्यालय	श्री राजीव कुमार नं. 2 सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी लेखापरीक्षा कार्यालय

6.	10.09.2021	स्वरचित काव्य पाठ	श्री कृष्ण मुरारी जयपुरियार वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री योगेश कुमार वरीय लेखापरीक्षक लेखापरीक्षा कार्यालय	श्री राम सिंगार चौहान सहायक लेखा अधिकारी लेखा एवं हकदारी कार्यालय
7.	13.09.2019	सुलेख प्रतियोगिता	श्री कौशल किशोर पाठक सहायक लेखा अधिकारी लेखा एवं हकदारी कार्यालय	संयुक्त रूप से श्री मणीन्द्र कुमार सिंह लेखापरीक्षक लेखापरीक्षा कार्यालय एवं श्री विपिन कुमार सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) लेखा एवं हकदारी कार्यालय	श्री अशोक कुमार सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी लेखापरीक्षा कार्यालय

को 2:30 बजे अपराह्न से बहुउद्देशीय भवन में किया गया। समारोह में प्रसिद्ध कार्टूनिष्ट श्री पवन कुमार भी आमंत्रित थे । इनके द्वारा बनाये गये कार्टून को समारोह स्थल पर प्रदर्शित किया गया था। समारोह के दौरान मंच संचालन श्री मनोज कुमार नं–1 वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी ने किया। हिन्दी पखवाड़ा समिति–2021 के द्वारा वरीय अधिकारियों के साथ–साथ आमंत्रित कलाकार श्री पवन कुमार का स्वागत पुष्पगुच्छ देकर किया गया। इसमें सुश्री शिवानी चन्द्रा, कनिष्ठ अनुवादक, सुश्री रुपा कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक तथा श्री वीरेन्द्र कुमार साहू, कनिष्ठ अनुवादक ने सहयोग किया। इसके बाद श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार(ले. एवं हक.) एवं श्री रामावतार शर्मा महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया । तदुपरांत श्री भारत कुमार पाण्डेय, लेखापरीक्षक ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। इसके उपरांत श्री मनमीत कुमार, वरीय उप महालेखाकार (ले. एवं हक.) महोदय ने स्वागत भाषण दिया। इन्होने पखवाड़ा को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में सहयोग करने हेतु सभी कर्मचारियों /अधिकारियों/ सहयोगियों की प्रशंसा की एवं इसके लिए आभार प्रकट किया । स्वागत भाषण के बाद माननीय गृह मंत्री का विडियों संदेश बड़े स्क्रीन पर दिखाया गया। विडियो संदेश के बाद प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) महोदय ने सभी कर्मियों को कार्यालयीन कार्य अधिकाधिक हिन्दी में करने हेतु राजभाषा प्रतिज्ञा दिलवाई । हिन्दी अनुभाग के वरीय अधिकारियों ने वित्तीय वर्ष 2020–21 के दौरान हिन्दी में हुए प्रगति को तथ्यों एवं आँकडों के साथ

प्रस्तुत किया। कार्यालयीन पत्रिका 'चेतना' (32 वें अंक) तथा 'प्रहरी' (65 वें अंक) का लोकार्पण क्रमशः प्रधान महालेखाकार(ले. एवं हक.) तथा महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने किया। इसके बाद प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) महोदय एवं महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय ने हिन्दी के महत्व एवं इसके प्रयोग पर सारगर्भित प्रकाश डाला।

हिन्दी पुरस्कार योजना के अंतर्गत तथा अन्य विभिन्न प्रतियोगिताओं में घोषित विजेताओं को प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार प्रधान महालेखाकार, महालेखाकार, वरीय उप महालेखाकार तथा उप महालेखाकारों के द्वारा प्रदान किया गया। इसके उपरांत कार्यालय के कवियों द्वारा कविताएँ प्रस्तुत की गई। श्री शिवशंकर उप महालेखाकार, श्री के.एम. जयपुरियार वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी , श्री योगेश कुमार वरीय लेखापरीक्षक श्री मनोज कुमार नं–1 वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी, सुश्री रुपा कुमारी कनिष्ठ अनुवादक, सुश्री अर्चना स.ले.अ. (तदर्थ) ने कविता पाठ कर सभी श्रोताओं को आनंद विभोर कर दिया।

अंत में श्री अभिषेक सिंह, वरीय उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय ने उपस्थित सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़ा के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद ज्ञापन दिया।

✤

हिंदी कार्यशाला

हिन्दी पखवाड़ा-2021 की झलकियाँ

पखवाड़ा समापन समारोह का उदघाटन करते हुए महालेखाकार

समारोह में पुष्पगुच्छ देकर महालेखाकार का स्वागत

प्रहरी के 65वें अंक का लोकार्पण

हिन्दी दिवस के अवसर पर गृहमंत्री, भारत सरकार का संदेश सुनते हुए कर्मचारीगण

पखवाड़ा समारोह में शामिल अधिकारी एवं कर्मचारीगण

पखवाड़ा समारोह में शामिल अधिकारी एवं कर्मचारीगण

प्रधान महालेखाकार से पुरस्कार प्राप्त करते प्रतिभागी

महालेखाकार से पुरस्कार प्राप्त करते प्रतिभागी

वरीय उप महालेखाकार से पुरस्कार प्राप्त करते प्रतिभागी

समारोह के अतिथि
श्री पवन, प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट
प्रधान महालेखाकार के
साथ

अतिथि
श्री पवन, प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट
उद्‌गार व्यक्त करते
हुए

हिन्दी अनुभाग
द्वारा अतिथि
श्री पवन, प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट
का स्वागत

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए वरीय उप महालेखाकार श्री अभिषेक सिंह

कविता पाठ करते हुए उप महालेखाकार श्री शिव शंकर

हिन्दी प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए श्री विकास कुमार न.1 वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)

हिन्दी पखवाड़ा 2021 के आयोजन में सक्रिय सहभागिता प्रदान करने वाले अधिकारी–कर्मचारीगण

कविता पाठ करते हुए मंच संचालक श्री मनोज कुमार, वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

कविता पाठ करती हुई सुश्री रूपा कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक

वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ

draft reply is put up for approval	-	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
under his signature and seal	-	उनके हस्ताक्षर और मुहर सहित
deems fit	-	उपयुक्त लगता है
referred above	-	उपरिनिर्दिष्ट
treat this as strictly confidential	-	इसे सर्वथा गोपनीय समझें
this requires administrative approval	-	इसके लिए प्रशासनिक अनुमोदन अपेक्षित है।
case should be kept pending under the circumstances	-	इन परिस्थितियों में मामला लंबित रखा जाना चाहिए
this office has no information in this respect	-	इस कार्यालय को इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है।
give top priority to this work	-	इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।
necessary correction may be carried out	-	आवश्यक शुद्धि कर ली जाए
necessary draft is put up	-	आवश्यक प्रारूप प्रस्तुत है
made to order	-	आदेशानुसार निर्मित
order communicated	-	आदेश संसूचित
order may be issued	-	आदेश जारी कर दिया जाय
issue today	-	आज जारी करें
on temporary basis	-	अस्थाई आधार पर
for further action	-	अगली कार्रवाई के लिए

सेवानिवृत्ति

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार परिवार के निम्नलिखित कार्मिक अपने कार्यालयीन दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं। प्रहरी परिवार उनके स्वस्थ एवं आनंदमयी जीवन की कामना करता है।

क्र.स.		नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.		अरूण कुमार सिंह	पर्यवेक्षक	30 मई, 2021
2.		सतीश चन्द्रा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31 दिसम्बर, 2021
3.		निर्मल कुमार पाण्डेय	सहायक पर्यवेक्षक	31 जनवरी, 2022
4.		अरूण कुमार सिन्हा	पर्यवेक्षक	28 फरवरी, 2022
5.		रंजन कुमार सिन्हा	पर्यवेक्षक	28 फरवरी, 2022

श्रद्धांजलि

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना में कार्यरत रामप्रवेश सिंह का दिनांक 02.02.2022 को आसमयिक निधन हो गया। प्रहरी परिवार उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता है। ईश्वर से कामना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दें एवं परिजनों को दुःख सहन करने का संबल प्रदान करें।

लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह समापन समारोह में उद्‌गार व्यक्त करते हुए बिहार विधान परिषद् के सभापति श्री अवधेश नारायण सिंह

लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह समापन समारोह में उद्‌गार व्यक्त करते हुए बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा

लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह समापन समारोह में उद्‌बोधन नृत्य प्रस्तुत करती हुई श्रीमति सुदिपा घोष